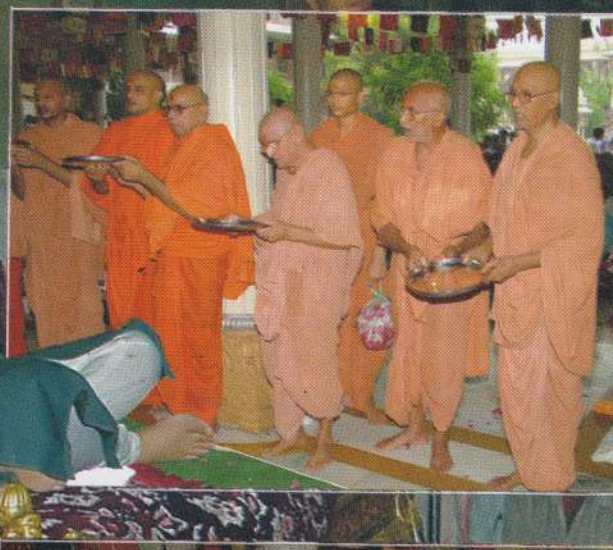
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

AUGUST '07





ગુરુપૂર્ણિમાના શુભ દિને
સંત - હરિભક્તો દ્વારા
ગુરુપૂજન

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



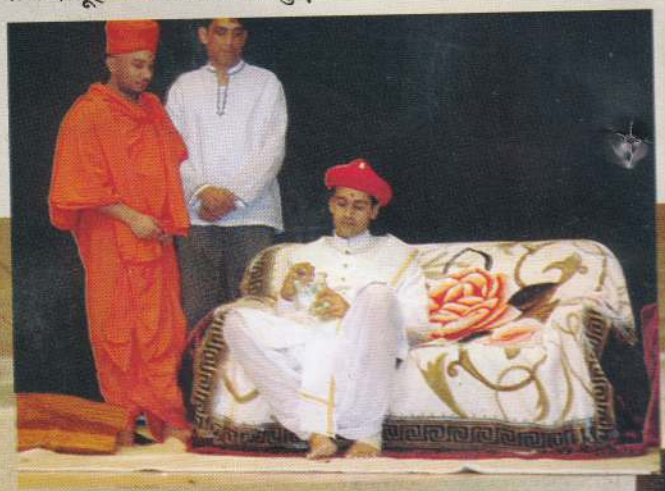
शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री की
पस्थिति में कथा करते हुए वहाँ के महंत स्वामी तथा शा.स्वा.
हरिकेशदासजी एवं संत मंडल ।



कोलंबिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथामृत पान
करते हुए शा.स्वा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

केनेडा-टोरेन्टो के एक विशाल होल में प.पू. आचार्य महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारते हुए, चिंतामणी पुस्तक का विमोचन करते हुए, हरिभक्तों के साथ समूह में आरती करते हुए ।









संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १ अंक : ४ अगस्त -२००७

अनुक्रमणिका

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	"आनंद की वर्षा" : प्रभु बंधाते नहीं है	४
४.	विचार मनमें आये और हंस बैठे एकांत में	५
५.	टोपीवाले को सत्संग का गुण	६
६.	प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की केनेडा सत्संग यात्रा	७
७.	भगवान में ही प्रीति होनी चाहिए अन्य में नहीं	९
८.	सदाचार धर्म का श्रीहरि का संदेश	११
९.	सत्संग सुरभि : ये शेरवजी तो गुलाब जैसे हैं	१२
१०.	सत्संग बालवाटिका (१) स्वभाव छोड़ना सीरवो (२) जगत के जीवों को सत्संग अच्छा नहीं लगता	१४
११.	भक्तिसुधा (१) गुरु से ही ज्ञान (२) राजबाई (३) न गई गंगा गोदावरी (४) जतनबाई (५) धमडका में करणीबा एवं रायधणजी दरबार के घर श्रीहरि	१५
१२.	प्रश्नपेटी	१९
१३.	समाचार वृत्तांत	२०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी शास्त्री निर्गुणदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अमृतधारा

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

मनुष्य को पमरेश्वर की प्राप्ति तो होती ही है । लेकिन मनुष्य परमेश्वर को पहचान शकता नहीं है । परमात्मा प्रत्यक्ष आकर सामने खड़े हो जाय तो भी उस परमात्मा को खोजने के नाना उपाय करते हैं । यही बड़ा अज्ञान कहलायेगा । इस माया रुपी अज्ञान को दूर करने के लिये इस जगत में जीव को सच्चे गुरु की जरुरत पडती है । सच्चे गुरु जीवात्मा को परमात्मा के स्वरुप की पहचान कराकर, उसी स्वरुप में दृढता पूर्वक प्रीति कराकर, आत्यंतिक मोक्ष के मार्गपर चलने के लिये पथप्रदर्शक बनकर जीव का बडा उपकार करते हैं । जिस परमात्मा को प्राप्त करने के लिये संसार सागर का अवलोडन करके सच्चे गुरु को प्राप्तकर लेना ही जन्म की सफलता है। इस विकट-विकराल कलिकाल में जैसे गुरुओं का तांता लगा हुआ है । सभी अपने जीहजुरी चेलो के पास अपने व्यक्तित्व की प्रशंसा कराकर तथा नाना विध तर्क-वितर्क द्वारा भोले मनुष्यों के ज्ञान को भ्रमित करके अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए लोगो से धन एकत्रित करके बड़ी संख्या खड़ी करने में रचे पचे रहते हैं । ऐसे लोगो को मोक्ष से कोई मतलब नहीं है । अपनी संस्था समृद्ध हो, अपने शिष्यों की संख्या बढे उसी में उन्हें स्वत्व है । ऐसी मनोवांछा को पूर्ण करने के लिए ऐसे गुरुओं का समुदाय धर्म की मर्यादा या लाज शर्म की गिन्ती भी नहीं करता । बल्कि नाना विध सुख सामग्रियों को एकत्रित करके वैभव भोगने में ही रात दिन अनेक प्रवृत्ति करता हैं । इन असंख्य धूर्तों से बचकर स्वयं विचार करना होगा कि जो मोक्ष का मार्ग बता शके ऐसे गुरु के शोध करने में अथक भगीरथ प्रयास की जरुरत है समय भी कम है एवं आयुभी कम हैं । तब क्या करना होगा ? ऐसा विचार कर अति दयालु अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वयं इस जीवात्मा की चिंता एवं दुःख को दूर करने के लिये ही धर्मकुल में आचार्यपद की स्थापना करके त्यागी-गृही सभी के गुरुस्थान पर धर्मवंशी आचार्य को स्थापित किया है । भगवान को प्राप्त करने में मनुष्य जन्म को सार्थक करलेने में ही मनुष्य जीवन की सफलता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा



जुलाई -२००७

१५. केनेडा-अमेरिका की धर्म यात्रा पूर्ण करके स्वदेश पधारे ।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर में हरिभक्तों को गुरुमंत्र देने हेतु पदार्पण ।

श्री धीरुभाई भीमजीभाई सोरठिया के यहाँ पदार्पण, हीरावाडी-बापुनगर ।

श्रीमणीलाल मगनलाल पटेल (माणसांवाला) के यहाँ पदार्पण सैजपुर बोघा ।

श्री कनुभाई वल्लभभाई तलावीया के यहाँ पदार्पण निकोल रोड ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा पदार्पण (अ.नि. श्री व्रिजेश घनश्यामभाई पटेल (उवारसदवाला) के पुण्यतिथि प्रसंग पर)

२४. श्री राकेशकुमार एम. काछिया के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।

२६-२७. सुरजपुर (कच्छ) पदार्पण ।

पूज्य लालजी महाराजश्री का मेघाणीनगर के बालको के साथ क्रिकेट मैच

जिस प्रकार सर्वोपरि बाल स्वरूप घनश्याम महाराज मित्रों के साथ विविध क्रीडा करके अनेक लीला चरित्र करते, जिसे सुनकर कितना आनंद आता है । इसी तरह अपने प्राण प्यारे प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज मेघाणीनगर के बाल मंडल के साथ क्रीकेट खेले थे । श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रांगण में ता. १७-५-०७ की प्रातः ८ से ११ क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया था ।

जिसमें प.पू. लालजी महाराजश्री की टीम विजई हुई थी । बालकों को प.पू. लालजी महाराज के साथ क्रिकेट खेलने का आनंद मिला । जिससे प्रत्येक बालकों को पू. लालजी महाराजश्रीने अपने हाथों से भोजन करवाया । प.पू. बडे महाराजश्रीने बाल मंडल के बालकों पर अति प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया था । इस प्रसंग से बालकों को खूब प्रोत्साहन मिला था ।

(रणछोडभाई देवाजी)

ऊँझा मंदिर में मिकेनिजम का भव्य हिंडोला दर्शन

ऊँझा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १३-८-०७ को ठाकुरजी के समक्ष मिकेनिजम का अद्‌भुत हिंडोले की प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजीने आरती उतारकर सभी के दर्शनार्थ खुल्ला कर दिया था । ता. ११-९-०९ तक दर्शन चालू रहेगा । सभी भक्त दर्शन का अवश्य लाभ लें । *(पटेल जयंतीभाई माधवलाल)*

"आनंद की वर्षा"

प्रभु बंधाते नही है

- शास्त्री स्वामी हरिजीवनदास (महुधा वाले)

घनश्याम एवं वेणी पक्के दोस्त थे। एक-दूजे बगैर जरा भी अच्छा नहीं लगता। जहाँ देखो दोनो साथ ही दिखते थे। दोनो की दोस्ती खूब जमी थी।

थोडे समयसे एक-दूसरे के यहाँ आना-जाना बढ गया था। मित्रता के कारण दोनो अपने घर में ही चोरी करने लगे। चोरी में दूसरा तो कुछ नहीं चुराते थे पर दही, दूध खूब पसंद था। इसलिए घर से दही-दूध चोरी हो जाता। वेणीभाई की माता लक्ष्मीबाई को हुआ की मेरा वेणी तो अच्छा है। किन्तु ये घनश्याम मेरे घर में चुरा कर खाते है। दूसरी तरफ सुहासिनी भाभी को भी यही लगा की अपने घनश्याम सीधे-सरल है। ये उनका काम नहीं है ये तो उस वेणी का काम है वह चोरी कर खाता होगा।

दोनो परिवार को एक दूसरे के बच्चो पर शङ्का होने लगी। किंतु हकीकत यह थी कि दोनो को दूध दही खूब पसंद था। दोनो मौका मिलते ही घर में प्रवेशते और चोरी से सबकुछ खा जाते थे। ऐसा कब तक चलता। लक्ष्मीबाई की सहन शक्ति से बाहर होते ही साफ साफ कह दिया की मेरे घर में घनश्याम ही चोरी करता है सब खा जाता है। मेरा वेणी तो ऐसा कर ही नही सकता। उसे चोरी करना आता ही नहीं है।

यह बात भाभी से सहन नहीं हुई और बोली की जरा मुंह संभाल कर बाते करो और किसी पर भी आरोप मत लगाओ। हमारे घनश्याम तो जो दिया जाय वही खाते है नही देते तो भूखे ही सो जाते है। आपका वेणी ही चोर है। घर में घुस कर दूध-दही खा जाता है। नही बोलते तो झुठा आरोप लगाने का ?

बात बराबर जम गयी। लक्ष्मीबाई गुस्सागई। और घनश्याम को चोर साबित करने में कुछ बाकी नहीं छोडी। सुहासिनी भाभी बोली जब वे आपके यहाँ चोरी करे तो उन्हें बांध देना। थोडे लोग बोले हाँ ठीक है। सबुत के बगैर बोलना फिजुल है। इसलिए आप ऐसा ही कीजिये। "मुझे कहाँ किसीसे डर लगता है, कल मैं घनश्याम को बांधने वाली हूँ" बोलकर लक्ष्मीबाई घर गयी।

दो-तीन दिन पश्चात् घनश्याम एवं वेणी ने फिर वही शुरु किया। दोनो वेणी के घर में मीठी ताजी दहीं खायी। फिर जब भागने लगे तब वेणी की माँ आयी। अभी तक उनका गुस्सा कम नहीं हुआ था तो मिला हुआ मौका कौन छोडे। वेणीराम को जाने दिया और घनश्याम को बांध दिया उनके मुख पर दही लगी थी। लक्ष्मीबाई ने पूरे गाँव को इकट्ठा किया। देखो, इस चोर घनश्याम को मैने बांधा है। पलभर में बहुत सारे लोग जुट गये।

बडे भाई कहीं बाहर गये थे इसलिए भक्तिमाता सुहासिनी भाभी उसके घर गये वहाँ कोलाहल चल रहा था। भाभी ने कहा कहाँ है घनश्याम बताओ ? लक्ष्मीबाईने स्आब से दरवाजा खोला और बोली ये रहे आपके सुपुत्र। मैं कब से कहती थी आप नहीं मानते आखीर रंगे हाथो पकडा गया न ?

तभी लोग हंसने लगे। लोगो का उस समय खूब मनोरंजन हुआ और गाँव वाले लोग तालीयाँ बजाने-लगे। लक्ष्मीबाई की बुद्धि बिगड गयी है। लगता है दिखता नहीं है किसका लडका है।

भाभी ने कहा, लक्ष्मीबाई ! जानबूझ कर क्यों इज्जत बिगाड रही हो ? जरा आँखे खोल कर देखो कौन है ! किसे बांधा है ! ये घनश्याम हैं या वेणी ? लोग खूब हंसने लगे। लक्ष्मीबाई तो यह दृश्य देख शरमिंदा हो गयी। ऐसा कैसे हुआ। मैने तो घनश्याम को ही बांधा था। और वेणी यहाँ कैसे आ गया। वहाँ लोगो के बीच घनश्याम भी हंस रहे थे। सर्वत्र आनंद था। प्रभु की यह लीला थी जिससे समग्र छपैयावासी आनंदित हो गये।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है। तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम का थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- रुपये भर सकते हैं। शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है।

विचार मनमें आये और हंस बैठे एकांत में

- गोरधनभाई शंकरदास पटेल (सोजा)

हर हर गोपीनाथ ! मम कष्टम् ।हर।।
सुरनरमुनिवर जलधर सुंदर ।
मारमहामद मार ।।मम.।।
राजीवलोचन पापविमोचन ।
दुर्गापुरीसुविहार ।।मम.।।

श्री सहजानंद स्वामी, पूर्णब्रह्म परमात्मा के साथ प्रेम करना भक्ति-मौन हृदय की वाणी है। परमात्मा अपने मौन से उठते संकल्प विकल्प सुनते है। और गढढा प्र.प्र. वचनामृत में श्रीहरि कहते है, "भगवान की मूर्ति तो चिंतामणि है। और चिंतामणि जिसके हाथ में हो वह जिस पदार्थ का चिंतन करता है वह प्राप्त होता है। इस बात को समझने के लिए भगवान को परिपूर्ण जाना जाये तभी सत्संगी को सत्संग को इस लोक में परलोक का सुख प्राप्त होता है। जब देह का त्याग करता है तब अक्षरधाम में जाता है।" इस सत्संग का सुख प्राप्त करने का समय अर्थात् हेमंत ऋतु तथा उसमें आध्यात्मिक मानसिक तथा शारीरिक शक्ति को बढाने का समय योगकला सीखने का समय अर्थात् धनुर्मास का समय। किंतु इस कलियुग का प्रभाव सब जगह फैल गया है। सत्संग में होने के बावजूद - मौन रहकर धर्म, ज्ञान, वैराग्य सहित भक्ति करने का मार्ग चयन कर "प्रभात फेरी" में श्रीहरि का मंत्रोच्चार सुनाई देने पर भी बीच में संत, आचार्य, हरिभक्त, सत्संगी की मनोकल्पित टीका करने का मौका मिलता है, वहाँ आवाज सुनाई देती है। "सत्संग बिगड गया है" किंतु मैंभी बिगड गया हूँ यह बात समझ में नहीं आती इसका कारण है हम श्रीहरि की प्रथम वचनामृत की बात को ग्रहण नही कर पाये - इसलिये "भगवान का माहात्म्य संपूर्ण वांचने में नहीं आया। और साधु से भगवान का महात्म्य अगर जाना जाये तो वह साधु जब अपने स्वभाव के ऊपर बात करते है तब स्वभाव को छोड नही शकते वल्कि बात करनेवाले साधु का अवगुण लेते है। वे सत्संग में अलग हो जाते है।" इसलिए सत्संगमें आये हुए को शांति दे, काम, क्रोध, मान, लोभ, मोह, स्वाद इन षटरिपुओ से मुक्त करे वह मुक्तात्मा, वही संत और उसीका संग अर्थात् सत्संग जो अनेक जन्मो के शुभ संस्कारो का है। वही शुभ संस्कार कुसंग में या अविद्या में अंधश्रध्धा में, अज्ञानता में भ्रमित जीव को प्राप्त होता है, तब "अनेक जन्म संसिद्धिस्ततो याति परं गतिम् ।" के अनुसार जीवात्मा सत्संग के बल पर श्रीहरि के ऐश्वर्य को प्राप्त होता है। तथा शुद्ध, उच्च, सत्यदर्शी, सदाचारी तथा धर्मकुल आश्रित बनता है। परंतु अनेक जन्मो के पुण्यो का उदय होता है तब श्रीहरि सहजानंद स्वामी तथा धर्मकुल का आश्रय, संत समागम प्राप्त होता है। परंतु ऐसा सत्संग प्राप्त होना मुश्किल है, परंतु अहम् को गलाकर, मान, अभिमान, दंभ, प्रतिष्ठा को छोडकर छोटे-बडे सभी जीवो के प्रति आदरभाव रखना चाहिए। तो ही श्रीहरि के सत्संग में स.गु. मुक्तानंद स्वामी की भांति यथार्थ सद्गुरु को पहचानकर शुद्ध धर्मकुल को पहचानकर मुमुक्षुओ को यथार्थ गुरुओं का संपर्क हो सकता है।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं -

बहु मोंघा छे घनश्याम,
नावे नजरे तमने कोईने रे,
अक्षरवासी आठो जाम,
जेने रह्या छे अखंड जोईने रे,
अति थई दिन आधिन,
नित्य नमावे छे शीशने रे,
लगनी लगाडी रहे लीन,
जोई रह्या जगदीशन रे,
एवा मुक्तने मलवा काज,
मोटा इच्छे छे मनमां रे,
शिव, ब्रह्मा ने सुराज,
ते तो तापसे छे तनमां रे,
एवा देवतानां दर्शन,
यातांनयी बारमां रे,
निष्कुलानंद विचारो मन,
आवो हंसी बेसो एकांतमां रे।

संप्रदायका गौरव

अपने मूल संप्रदाय के निष्ठावान श्री दीलीपभाई शांतिभाई मकवाणा (जामका-अमरेली-वर्तमान में मुंबई - बोरीवली) जो २००७ वर्ष की महाराष्ट्र बोर्ड एस.एस.सी. में ९४.४६% प्रतिशत मार्क्स प्राप्त किये हैं। इसके साथ ही गुजराती पेपर में ९१% प्रतिशत प्राप्त करके बोर्ड द्वारा "छोटालाल महासुख रामभट्ट एवं रजनीकांत शाह" पारितोषिक प्राप्त करके समस्त संप्रदाय एवं अपनी ज्ञाति परिवार का गौरव बढाये हैं। अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

टोपीवाले को सत्संग का गुण

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

जब श्रीहरि जेतलपुर से अहमदाबाद पधारे उस समय अहमदाबाद के दुलाप साहब अपनी पत्नी के साथ स्वागत के लिये सामने आये । साहब अपनी गाडी को एक तरफ खडी रखे । हरि भक्तों की एवं संतो की रीति अलौकिक देखे । सभी का नेत्र, श्रोत्र नियम में लगा हुआ था । जिससे साहबने श्रीहरि को मोक्ष दाता के रूप में पहचाना । यदि अपने घर में स्वयं कोई नियम नहीं रखता तो जबर दस्ती उसे नियम में रखना बहुत कठिन है । ऐसा विचार करते हुए पार्षदों को तथा अन्य सेवकों को देखा । श्रीहरि की तथा साहब की नजर एक हुई तब साहबने कहा अच्छा हुआ आप यहाँ पधारे । आप प्रसन्न तो है न ? हम प्रसन्न हैं । शहर में कितने लोग आप के आगमन से प्रसन्न नहीं थे । वे अपनी शक्ति के अनुसार जितना विरोध हो सका किये । लेकिन कुछ कर नहीं सके । आप का आचार विचार देखकर उनमें शांति नही थी, जिससे वे कुमति पैदा करते हैं । आप शास्त्र के अनुसार चलते हैं । इसलिए शास्त्र आप की सहायता करता है । हमारे लायक कोई काम हो तो कहियेगा । साहब कांकरिया जाकर रहने की व्यवस्था देखने लगे । जहाँ जाते वहाँ गाडी लेकर जाते । सभी उन्हे देखने आते । साहब गाडी चलाते पत्नी पीछे बैठी रहती । साहब आनंद में कहने लगे कि कितने खराब विचार वाले हैं जो झूठ बोलकर स्वामिनारायण को कलंकित करते हैं । लेकिन स्वामिनारायण क्षमाशील हैं । दुलाप साहब प्रतिदिन घोडागाडी पर बैठकर सुबह-साम महाराज से मिलने आते स्वामिनारायण से कहते कोई कामकाज होतो कहियेगा । आपके दर्शन से आत्मशान्ति मिलती है । आपकी एवं आपके अनुयायियों की नीति देखकर बहुत आनंद होता है । इसके अलांवा आप के दुष्मन अनीती का वर्तन करते हैं । जिससे उनकी बुद्धि व्यभिचरित हो जाती है । परिणाम स्वस्म हस्ति स्नान के समान उनकी क्रिया हो जाती है । जैसे अन्न को भूंजकर बोये ऐसा उनका वर्तन है । नाना प्रकार की वात करके चारो तरफ निरीक्षण करके चौकीदारों पर कार्यभार छोड़कर अपने निवास स्थान पर जाते थे । प्रतिदिन जब प्रातःकाल संतो की रसोई होती उस समय अवश्य उपस्थित रहते ।

दुलाप साहब श्रीहरि को अपने बंगले में प्रवेश (पदार्पण) करवाये । श्रीहरि को सोने के सिंहासन पर बैठाये । साहब श्रीहरि से कहे कि हम आपको प्रसन्न करने के लिये बुलाये हैं । श्रीहरिने दुलाप साहब के नीतिमत्ता की प्रशंसा की । इतनी भीड़ वहाँ होगयी थी फिर भी लोगों में कितनी शान्ति थी । साहब ने कहा जिस तरह आप मात्र उपदेश देकर जिस नीति को चला रहे है, वह धन देने पर भी चला पाना सम्भव नहीं है । इस कला को केवल आप ही जानते हैं । हमें भी यह कला आप बता दीजिये । तब श्रीहरिने कहा, इसमें कोई करामात नहीं है । हम ईश्वर को मानते हैं । ईश्वरीय यह करामत है । उसकी जो भजन करता है, उसमें यह करामात आ जाती है । दैवत्व आ जाता है । वह अन्तर में रहता है - बाहर दिखाई नहीं देता । वही मनुष्याकृति धारण करता है । उसे पहचानना बडा कठिन है । लेकिन उसे पहचानने की एक रीति है । जैसे सोना एवं पीतल दोनो एक समान दिखाई देता है, जब उसे अग्नि में डाला जाता है तब सोना चमकने लगता है और पीतल काला पड़ जाता है । इसी तरह ईश्वर किसी पदार्थ के लिये दीन नहीं बनता, वह पदार्थ को तुच्छ समझता है । क्योंकि पदार्थ भी उसी का बनाया हुआ है । उस पदार्थ का उपभोग जीव करता है । इसीलिये ईश्वर किसी काल में भी पदार्थ के साथ बंधता नहीं है । इस के अलावा बंधे हुए जीव को वह छोडाता है । मनुष्य की तरह वह वर्तन नहीं करता, उससे अलग ही कुछ दिव्य भाव उसमें होते हैं । उसकी इच्छा से मनुष्य का वह दिव्य भाव दिखाई देता है । आसुरी भाव वालो को दिखाई देते हुए भी समझ में नहीं आता है । श्रीकृष्ण भगवानने ऐसे दिव्य भावों को प्रायः दिखाया है । फिर भी असुरों में यह दिव्य भाव नहीं आया ।

साहब, श्रीहरि से कहते है कि - अयोध्या के पास बमनीयाहर गाँव के राजा अद्‌भुतसिंह थे । उसी गाँव में आपके पिता काविवाह हुआ था। उनके आप मध्यम पुत्र हैं । भगवान के विना जगत को असत्य मानकर आप घर छोड़कर निकल पडे । इटार पांडे, सरवरिया ब्राह्मण आप हैं । सरवरिया में तीन एवं तेरह घर उत्तम बताये गये हैं । ऐसा हम सुने हैं । सरवार देश में जो ब्राह्मण कंठी धारण करते हैं वे उत्तम है, वे कभी किसी जीव की हिंसा नहीं करते । दूसरे देवी के भक्त देवी के प्रसाद को लेने में शंका नहीं करते । देश में अन्न से दुःखी होकर बाहर जाकर नौकरी करते हैं । नौकरी में उन्हें छोटापन दिखाई नहीं देता । भगवान के भक्त को हिंसक देशअच्छा नहीं लगता ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की कैनेडा सत्संग यात्रा

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने स्वयं अहमदाबाद के श्री नरनारायणदेव गादी की स्थापना की थी जिसके वर्तमान पीठाधिपति श्रीहरि के सातवें वंशज भागवत धर्म सुरक्षक प.पू.ध.धु. आचार्य महराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के धर्मधुरा सम्हालने के बाद प्रथमवार ब्रह्मनिष्ठ संतो के साथ धर्मप्रेमी हरिभक्तों को दर्शन, आशीर्वचन एवं सत्संग का सुख देने के लिये केनेडा पधारे थे।

धर्मयात्रा का प्रारम्भ ता. २१-६-०७ गुरुवार की रात्रि में ९-०० बजे पीअरसन एरपोर्ट, टोरेन्टो से हुआ था। प.पू. महाराजश्री के साथ जयपुर के महंत स्वामी देवस्वरूपदासजी, इलाहाबाद के को. स्वा. धर्मकिशोरदासजी के दर्शन होते ही आनंदित हरिभक्तों ने नरनारायणदेव की जय, श्री स्वामिनारायण भगवान की जय, की ध्वनि से आकाश को गुंजित दिया था। महाराजश्री का स्वागत रमेशभाई पटेल कोठावाला, दशरथभाई चौधरी, नटुभाई, भाईलालभाई, शशीकांतभाई, संजीवभाई, परेशभाई, बाबूभाई, माणेकभाई, मुकेशभाई, महेशभाई टांक, प्रकाशभाई, जयेशभाई आदेशरा, निरवभाई, उदयनभाई, जितेनभाई, इत्यादि हरिभक्त एवं अमेरिका से आये हुए युवान सत्संगी पुष्पहार तथा पुष्पगुच्छ से किये थे। स्वागत विधि पूर्ण होने के बाद श्री रमेशभाई पटेल कोठावाला के हाउस पर निवास किये थे।

टोरेन्टो के विस्तार में रहने वाले हरिभक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने के लिए एवं दर्शन का सुख देने के लिए पदार्पण का प्रथम क्रम प्रारम्भ हुआ।

ता. २२-६-०७ शुक्रवार के दिन सर्वप्रथम रीचमोन्ड हील सुमनभाई पटेल के यहाँ पदार्पण किये। मारखम विस्तार सुमीतभाई, हर्षदभाई, राकेशभाई इत्यादि लोगों को लाभ देकर अनन्य भक्त नटुभाई पटेल के यहाँ भोजन किये।

सायंकाल का पदार्पण नोर्थयोर्क से पदार्पण प्रारम्भ किये। विपुलभाई पटेल किशोरभाई महेता इत्यादि के घरो में पदार्पण किये। कोन कोर्ट विस्तार में दिनेशभाई चौधरी, जशुभाई चौधरी के यहाँ पदार्पण किये। पुराने सत्संगी दशरथभाई चौधरी के यहाँ भोजन करके रात्रि में १०-३० बजे निवास स्थान पर गये। आज के दिन करीब १९ घरो में पदार्पण किये।

ता. २३-६-०७ शनिवार को गुजरात के गुर्जर हरिभक्तों से परिपूर्ण ऐसे स्काटबोरों विस्तार में सत्संग सेवक संजीवभाई के यहाँ से प्रारम्भ हुई। निरव मिस्त्री इत्यादि हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करके ३७७ मारखमरोड बिल्डींग में रमेशभाई आर. पटेल, अशोकभाई, निलेषभाई के यहाँ पदार्पण करके १०५० मारखम रोड बिल्डींग में पधारे। नटुभाई, अल्पेशभाई इत्यादि के यहाँ पधारे थे। ५५५ ब्री मोर्टन बिल्डींग में मुकेशभाई, माणेकलाल, बाबूभाई मोखासणवाला इत्यादि सत्संगियों के यहाँ पदार्पण करके मोर्निंग साईड पर भरतभाई के यहाँ पदार्पण किये। लगभग दोपहर में २ बजे निवास स्थान पर पधारे थे। प्रातः करीब तीस जितने पदार्पण किये।

सायंकाल का पदार्पण बर्लिंग्टन लेकशोर में रखा गया। केरेट ज्वेलर्स वाले के यहाँ पदार्पण करके, दक्षिण भारतीय रविभाई के यहाँ पदार्पण करके ठाकुरजी को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण किये थे।

ता. २४-८-०७ रविवार के दिन केनेडा में रहने वाले हरिभक्तों के हृदय के आनंद की सीमा नही रही अपने प्राण प्यारे महाराज को प्रसन्न करके आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से प्रातः से ही भोजन बनाना, स्टेज सजाना, महाराज के स्वागत की तैयारी करना इत्यादि कार्य में सभी लगे रहे। छोटे बच्चे, युवान वृद्ध, तथा अन्य स्त्री पुरुष अपनी योग्यता के अनुसार सेवा में लगे थे। महाप्रसाद को सत्संगी स्त्री-पुरुष ता. १७-६-०७ रविवार के दिन सनातन मंदिर में बनाये और भगवान को भोग लगाकर महाराजश्री को भोजन कराकर उपस्थित सभी सत्संगियो को कराये।

Sts. Peter & Paul Banquet Hall में सत्संग सभा का आयोजन सायंकाल ३-०० से ७-०० तक किया गया था।

सत्संग सभा का प्रारम्भ परमकृपालु इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से हुआ। मंगलाचरण महेशभाई टांकने किया। शशीकांतभाईने धुनि करवाई। कीर्तनो की शुरुआत बाल सत्संग से हुई। "व्हाला रमझुम करता मारा कान शमीरे गाये तमारी मूर्ति विना मारा नाथ रे...." इस कीर्तन को आशुतोष ने गाया। संत तथा महाराजश्री जब हॉल में पधारे उस समय तक कीर्तन तथा धर्मकुल माहात्म्य, निष्ठा, नियम विषय पर सुंदर अभ्यासपूर्ण

प्रवचन महेशभाई टांक, शशीकांतभाईने किया । देवाशिष ने ढोलक बजाया, चिराग ने मजीरा बजाया । पूज्य महाराजश्री जब मंच पर पधारे उस समय ही पुष्पहार, एवं पुष्पगुच्छ, द्वारा स्वागत किया गया । विविध प्रकार की सेवा करने वाले यजमानों ने महाराजश्री की आरती उतारी । नन्द संतो ने कीर्तन गाया । को.स्वा. धर्मकिशोरदासने जयपुर के महंत स्वा. देवस्वरूपदासने प.भ. दादाखाचर, जीवुबा, लाडुबा, झमकुबा, आदि श्रीहरि भक्तों की श्रीहरि के प्रति निष्ठा, पक्ष, नियम का गुणानुवाद किया। गुजरात विसनगर से महाराजश्री के कृपापात्र श्री उदयनभाई भी पधारे हुए थे । जिन्होंने वचनामृत के ऊपर अभ्यासात्मक प्रवचन किया। मिहीर पटेल ने अंग्रेजी में सत्संग केविषय में प्रवचन करके महाराजश्री को प्रसन्न कर दिया ।

अब जिनकी अमृतवाणी को हृदय में उतारना था, जो सभी के उद्धारक है, जिन्होंने सभी के हृदय मेंअपना स्वत्व स्थापित कर लिया हैऐसे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वचन सुनने के लिए सभा शांत हो गयी । पूज्य महाराजश्रीने भगवान की भक्ति करना, घर में सत्संग सभा करना, सेवा करना, भगवान में आत्म समर्पण करना इत्यादि की सीख दी । केनेडा में अपना मंदिर जल्दी बने, सभी सत्संगियों की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, श्रीजी महाराज सभी को सुखियां करे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करके सभी को आशीर्वाद दिये थे । सभामें स्टेज के ऊपर रखे हुए भगवान नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव, भगवान स्वामिनारायण की महाराजश्रीने आरती की, बाद में भक्तों ने भी आरती की थी । पूज्य महाराजश्री के चरण स्पर्श का लाभ सभी को मिला था । I.S.S.O. Canada की तरफ से प्रकाशित की गयी एवं महाराजश्री के करकमलों द्वारा विमोचन की गयी "चिंतामणी" पुस्तक सभी उपस्थित सत्संगियों को भेंट में दी गयी । कितने मुमुक्षुओं ने महाराजश्री से कंठी पहनी । इस प्रसंग पर अमेरिका से श्री ज्ञानेशभाई धोलकिया पधारे हुए थे ।

सभा के अंत में सभी को प्रसाद का बोक्स एवं पानी की बोतल दी गयी थी । सभा का संचालन करते हुए सत्संगी व्रजेशभाई पोथीवालाने नंदसंतो का उदाहरण देकर समझाया था ।

आज की सभा में विविध प्रकार की सेवा जिस में प्रिंटीग, रसोई, स्टेज सजाना, पू. महाराजश्री का स्वागत, हरिभक्त सेवा इत्यादि रमेशभाई पटेल, दशरथभाई, संजीवभाई, धर्मेन्द्रभाई, नटुभाई, व्रजेसभाई, निरव मिस्त्री, शशीकांतभाई, परेसभाई, बाबूभाई, महेशभाई, माणेकलाल, प्रकाशभाई, मुकेशभाई के परिवारजनोने की थी ।

पूज्य महाराजश्री के पदार्पण का दूसरा दौर चालू हुआ । २५-६-०७ सोमवार की प्रातः ब्रेम्टन विस्तार में जयेशभाई आदेशरा के यहाँ प्रथम पदार्पण करवाया गया । वहाँ से जयंतीभाई चौधरी, नीतीनभाई के यहाँ पदार्पण करके प्रति शनिवार को सत्संग सभा का संचालन करने वाले शशीकांतभाई के यहाँ पदार्पण करके आशीर्वाद दिये थे । इसके बाद मनीषभाई ठक्कर, रमेशभाई शेलत, मनीष देवा इत्यादिके यहाँ पदार्पण किये थे । अंत में महेशभाई टांक के यहाँ भोजन करके निवास स्थान गये थे । सायंकाल - पदार्पण इटोबीको तथा मीसीसागा विस्तार में रखा गया था । मितेष भावसार, हितेनभाई, याज्ञिक, शैलेषभाई, विपुलभाई, प्रकाशभाई, मलयदेसाई, व्रजेशभाई, धर्मेन्द्रभाई इत्यादि हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण करके श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल के भाईलालभाई के परिवार के परेशभाई के यहाँ रात्रि में ११-४५ पर भोजन करके निवास स्थान पर पधारे थे । आज करीब वीस जितने घरों में पदार्पण किये थे ।

ता. २६-६-०७ मंगलवार के दिन ज्येष्ठ शुक्ल-११ को श्री हरिकृष्ण महाराज की महापूजा की गयी थी । महापूजा कोठारी धर्मकिशोर स्वामीने करवाई। महापूजा रसिकभाई पटेल के हाउस में रखी गयी थी । सायंकाल रसिकभाई के गेस स्टेशन का खात पूजन पूज्य महाराजश्री के हाथ से किया गया था । सेवा करने वाले सत्संगी भाई-बहनो की सत्संग सभा रात में ८-३० रखी गयी थी । धुनि-कीर्तन-प्रवचन के बाद पू. महाराजश्रीने सभी को भगवान की भक्ति एवं, निश्चय, पक्ष रखने की बात कहकर सभी के उत्तरोत्तर वृद्धि का आशीर्वाद दिया था । पूज्य महाराजश्री की आज्ञा यह कि श्री नरनारायणदेव का यहाँ मंदिर बने सभी ने आज्ञा स्वीकार कर लिया । अंत में सबसे छोटे सत्संगी आशुतोषने "तमारी मूर्ति विना मारा नाथ रे बीजु मने आपशो मा" कीर्तन गाकर महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी । सभी भक्तोने पू. महाराजश्री के फूल का गुलदस्तां चरण में अर्पित करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । बाद में पू. महाराजश्री भोजन के लिए पधारे थे ।

प.पू. महाराजश्री द्वारा हस्ताक्षरित चिंतामणी पुस्तक सेवा करनेवाले सभी को भेंट में दी गयी थी ।

ता. २७-६-०७ बुधवार को प्रातः केनेडा से अमेरिका जानेके लिए प्रयाण किये थे ।

(भाईलालभाई पटेल)

भगवान में ही प्रीति होनी चाहिए अन्य में नही

- जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर - अहमदाबाद)

जगत के सभी पदार्थ दुःख देने वाले हैं। नाशवंत है। फिर भी जीव यह जानते हुए भी जगत को प्रधान मानता है, जिससे जागतिक एषणा जाती नहीं है। परमेश्वर को सुख का सागर जानकर भी परमेश्वर में चित्त नहीं लगता बल्कि स्त्री - धन इत्यादि में से प्रीति हटती नहीं है।

इसीलिए महाराजने गढडा मध्य के ३८ वें वचनामृत में बताया है कि "संसारी जीव को कोई धन देनेवाला हो या पुत्र देने वाला मिले तो उसी में प्रीति होती है। परंतु भगवान के भक्त में जब प्रीति जगजाती है तो जगत के पदार्थों में प्रीति कम होने लगती है। जो सत्संगी होकर संसार के विषयों में प्रीति करे तो उसे विमुख ही जानना। लोभी को धन में प्रेम होता है - भगवान में नहीं।

गढडा अंत्य के ३३ वें वचनामृतमें ऐसा कहा गया है कि धन-दौलत-स्त्री एवं पुत्र में जिसकी बुद्धि है ऐसे कतिपय लोग हैं।

मंदिर में आकर यदि धन-धंधा की वात करते हैं तो हम माया में फंसे हैं या भगवान के प्रेम में फंसे हैं।

हरिकृष्ण चरित्रामृत सागर में भगवान ने स्वयं बताया है कि लोज के वैरागी को धन मे आसक्त होने के कारण सांप बनना पड़ा था।

पछी बोलिया एम दयाल,
तमे सांभळो सर्व मराल।
जो धनमांहि केवा पाप,
म्होरा (सपिया) सारुंथवुं पड्युं साप ॥

भगवान को भक्तों का कल्याण तो करना है, लेकिन जीव जाल में फंसे होने के कारण धन-स्त्री-संसार-व्यापार इत्यादि को पसंद करके जन्म-मरण स्री दुःख का ही वरण करता है। करोडो जन्म हों तो भी निर्वासनिक हुए विना महाराज की सेवा का लाभ नहीं मिलेगा।

एक समय भगवान का लक्ष्मी के साथ संवाद हुआ कि आप के अधिक भक्त हैं या हमारे ? तब भगवन ने कहा मेरे भक्त अधिक हैं। लक्ष्मीजी ने कहा नहीं हमारे भक्त अधिक है। भगवानने कहा चलिये इसकी परीक्षा की जाय कि किसके भक्त अधिक हैं। लक्ष्मीजीने भगवान से कहा आप अपना पराक्रम पहले दिखाइये बाद में हम अपना पराक्रम दिखाएंगी। भगवान ने ठीक ऐसा कहकर ब्राह्मण का स्मधारण करके एक नगर में गये वहाँ लक्षाधिपति शेठो को एकत्रित करके कहे कि मैं काशी से आज ही पढकर आ रहा हूँ, आप सभी को भगवान संबंधी ज्ञान देना है। जिससे आप सभी का मोक्ष हो और मेरी विद्या की सफलता हो। इसके लिये हमें आपसे कुछ प्राप्ति की आशा नहीं है। केवल आप सभी का मनुष्य जन्म सफळ बने यही हेतु है। ऐसा कहकर अपनी अमृतवाणी से सभी को वश में कर लिये। उन शेठो ने सोचा कि मुफत में ही यह लाभ देने आयें है तो इसका लाभ लेलिया जाय। ऐसा विचार कर महाराज से कहे कि कल से आप अपनी कथा प्रारम्भ कीजिये। तब महाराजने कहा जब मेरी कथा प्रारम्भ होजाय उसके बाद बीच में कोई उठेगा नही। यह सुनकर शेठोंने हाँ कर दिया। महाराजने पहले उनसे हस्ताक्षरित करवा लिया और अपने पास उसे रखे। कथा का आरम्भ किये सभी उस को सुनते ही वशीभूत हो गये, अब क्या सारा गाँव आबाल नर-नारी कथा में आने लगे। यहाँ का ऐसा वातावरण देखकर लक्ष्मीजीने विचार किया कि भगवान तो अपने भक्तों को अपनी तरफ आकृष्ट कर लिये, अब मैं अपने भक्तों को आकृष्ट करके भगवान को बताऊँ। ऐसा विचार कर वृद्धा का स्मधारण करके नगर शेठ के घर गयीं। शेठ के घर तो कोई था ही नही, सभी कथा सुनने चले गयेथे। मात्र कामकाज से निवृत्त होकर शेठानी भी जाने के लिये निकल रही थी, उसी समय वृद्धा का स्मधारण किये हुए लक्ष्मीजी दरवाजे पर दस्तखत दीं और कहीं कि मैं भूखी हूँ, मुझे खाने को दो। तब शेठानी ने कहा तूँ अभी कहाँ से आ गयी, अभी मैं कथा सुनने जा रही हूँ। तब वृद्धाने कहा कथा में ऐसा आता होगा न ? कि भूखे को भोजन कराना बहुत पुण्य कारक होता है। यह सुनकर शेठानी ने वृद्धा को जल्दी लेने के लिये कहा तब वृद्धा अपनी झोली में से सोने की थाली-गिलाश कटोरी-चमची निकाली उसी में भोजन किया, थोडा खाई और सब वहीं वर्तन छोड़कर चलने लगी। यह देखकर शेठानी को बडा आश्चर्य हुआ, कि यह कैसे उसने वृद्धा को कहा आप इसे क्यों छोडकर जा रही है तब वृद्धाने कहा आप के काम में आवे तो आप रखलो, शेठानी और प्रसन्न होकर कही आप सकिये आप को ताजा भोजन कराती हूँ। वह वृद्धा स्की और भीतर जिस सोफे पर बैठी वह भी सोने का हो गया, यह देखकर अपने नौकर से कही कि तुम जाकर शेठ को बुला लाओ और कहना कि यह जिसके भी घर यहाँ से जायेंगी वह हमसे अधिक धनाढ्य हो जायेगा, इसलिये आप विना विचारे यहाँ आजाइये। यह सुनते ही शेठजी उठकर चलने लगे। तब महाराजने कहा कहाँ चल दिये तब शेठने कहा थोडा काम आ गया है। महाराजने कहा अपना

निश्चय क्या हुआ है ? तब शेठने कहा निश्चय भले हुआ है लेकिन व्यवहार का काम पहले । ऐसा कहकर शेठजी घर की तरफ चल दिये । घर पहुँचकर देखा तो सबकुछ सोने का वृद्धा मां के चरण में गिरकर कहने लगे, डोशी मा आप मेरा घर छोड़कर कही मत जाइये, आप जैसा कहेंगी हम वैसा ही करेंगे । इतने में तो आस-पडोश के लोग यह सब कुछ देखकर वृद्धा माँ को आमंत्रित करने लगे, परंतु नगर शेठने रसोइये को बुलवाकर रसोई, भिन्न-भिन्न सब्जी, मठ्ठा, चटनी, पूडी आदि अन्नकूट के भोग की भांति पकवान सजाकर माँ के सामने रखदिया । वह वृद्धा माँ जिस बर्तन को हाथ लगाती थी वह सोने का हो जाता था । गाँव में बात चलने लगी की ए वृद्धा माँ है जो जिस भी वस्तु को हाथ लगाती है वह सोने की हो जाती है । इस बात से सभा में भी खलबली मच गई । लोग सभा में से उठकर वृद्धा माँ को अपने घर पर पधारने हेतु आमंत्रित करने लगे । कि वह कथाकार पंडित मेरी निंदा करता है इसलिए उसे गाँव में से निकालो तो ही मैं इस गांव में रहूँगी । सभीने माताजी की बात से संमति दिखाई । सभी लोगों ने सभा में जाकर कहा, "महाराज पोथी बांधिये । तब महाराजने कहा सभी का समय पूरा नहीं हुआ है । लोगोने कहा समय पूरा हो गया जल्दी पोथी बांधिये आप । आप माता की निंदा करते हैं । तब पंडितजीने कहा मैं माताजी की निंदा कब करता हूँ ? मैं तो कथा करता हूँ । सभी लोगोने पुनः यही कहा की आप निंदा करते ही हो । और इस प्रकार उन्हें जानेके लिये तैयार कर लिया । तब माताने कहा एक कुम्हार का गर्धभ लाइये, प्याज की माला बनाकर महाराज को पहनाकर गर्धभ पर बैठाकर भेजो तो ही मैं आप के गाँव में रहूँगी । ऐसा कहने पर सभी युवान तैयार हो गये तथा महाराज से कहे इस पर बैठिये । ऐसा कहकर महाराज को पकड़कर जैसे ही बैठाने जाते है त्यों ही महाराजने अपना स्व बदलकर भगवान का असल स्व दिखाया । अपना स्व माताजी के जैसा बना दिये । तथा स्वंयं अदृश्य हो गये माताजी का स्व महाराज जैसा हो गया । युवान लडके उस महाराज को गर्धभ पर बैठाने जाते है । उसनेकहा की मैं तो माताजी हूँ महाराज नहीं ।

तब लोगोने कहा अभी तक माताजी की निंदा कर रहे थे । और अब मैं माताजी हूँ ऐसा कह रहे हो । ऐसा कहते हुए जुलूस बाहर निकला । बाद में लोग वापस तथा भगवान के सामने आकर बैठे । उसी समय लक्ष्मीजी पधारी । भगवानने कहा कि किसके भक्त अधिक है ? लक्ष्मीजी ने कहा कि आप को स्व बदलने आता है नहीं तो वहाँ पर आप ही का जुलूस निकलने वाला था। इस प्रकार दुनियां में लक्ष्मी मिलने पर भगवान को कोई नहीं पूछता है । भगवान को छोडकर सभी लक्ष्मी का मोह रखते हैं । उसके बाद लोग लक्ष्मी की खोज करने लगे । परंतु उन्हें मिली नहीं । क्योंकि लक्ष्मी पतिव्रता है जहाँ भगवान रहते हैं वे भी वही रहती है । मनुष्य भगवान में निष्ठा रखे तो ही वहाँ लक्ष्मी का वास होता है । इसलिये भगवान की चाहना हो तो भगवान की भक्ति करनी चाहिए ।

पृष्ठ ६ से आगे.....

टोपीवाले को सत्संग का गुण

इसलिये आप के उत्पन्न होने से हिंसक देश भी उत्तम हो गया एवं तीर्थस्व हो गया। आपके विषय में जिसे ज्ञान है, आपकी जिसे महिमा है, वे ही इस वात को समझ सकते हैं । आप कल्याण की मूर्ति हैं । आप की जो सेवा करते हैं उन्हे कभी दुःख नहीं होता । आपके संत जैसा संत कही नहीं है । इस प्रकार वात करके साहबने श्रीहरि की पूजा की, साल ओढाया मेवा अर्पण किया बाद में कहे कि आप जैसे का कभी अपराध हमसे न हो ऐसी कृपा करियेगा । श्रीहरि ने कहा जो नीति पूर्वक आचरण नहीं करता उसके ऊपर ईश्वरीय कोप होता है । परिणाम स्वस्व उसका पतन निश्चित समझना चाहिए । इस प्रकार श्रीहरिने अंग्रेजो के शासन की भविष्यवाणी की और अंत में उनकी सत्ता का पतन हुआ .

अहमदाबाद में कांकरिया तालाब के किनारे श्रीहरि सभा कर रहे थे उस समय वहाँ पर दो साहब घोडे पर चढकर आये । आज्ञा मांगकर सभा में प्रवेश किये । श्रीहरि के पास आकर टोपी उतारकर बोले की आप स्त्री-पुरुष दोनों की अलग सभा करके उत्तम रीति का प्रचार किये हैं । उत्तम पुरुष उत्तम गुण ग्रहण करते हैं । वे ही उत्तम कहलाते हैं । जगत में गृही, त्यागी, स्त्री, पुरुष एकाकार वर्तन करते हैं । आपके संत यथार्थ में त्यागी हैं । पाषाण की स्त्री का भी स्पर्श नहीं करते । आठ प्रकार से स्त्री का त्याग करते हैं । गृहस्थ भी अपने नियम में व्यवहार करते हैं । श्रीहरि ने कहा हमारे आश्रितत्यागी हों या गृही हों दोनो जब तक धर्माचरण करते हैं तब तक हम उनके साथ रहते हैं और अपना मानते हैं । स्वामिनारायण को इष्टदेव मानकर एवं कारणों का कारणमानकर जो अपने धर्म का आचरण करता हैं एवं भक्ति करता हैं वहीं हमारा है । यह सुनकर साहब आनन्दित हुए ।

सदाचार धर्म का श्रीहरि का संदेश

- गोरधनदास शंकरदास पटेल (सोजा)

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति
निस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स
शान्तिमधिगच्छति ॥

पवित्र पुरुषोत्तम मास श्रीहरि स्मरण में, तीर्थयात्रा में संत सेवामें, श्रीहरि की कथाश्रवण में बीता । अपने मन की व्यथा को दूर करने के लिये श्रीहरिने शुद्ध ज्ञान-वैराग्य-भक्तिकी बात कही है। यह बात श्रीहरिने शिक्षापत्री में सभी के लिए उपदेशात्मक चित्रण किया है ।

ये पालयन्ति मनुजाः
सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च
महासुखाः ॥५॥

श्रीमद् भागवत पुराण आदिक सभी सत्शास्त्र जीवमात्र के कल्याणार्थ है । जिसके जीवन में सदाचार है वह इस लोक एवं परलोक में महानसुख को प्राप्त करेंगे ।

शि.प. के २० वें श्लोक में श्रीजी महाराज कहते हैं -

मिथ्यापवादः कस्मिंश्चिदपि स्वार्थस्य
सिद्धये ।
नारोप्यो नापशब्दाश्च भाषणीयाः
कदाचन ॥२०॥

इस आज्ञा को मानकर हम प्रतिज्ञा लें कि "किसी को भी गाली नहीं देंगे ऐसा करने से सभी के जीवन में परिवर्तन होगा और सारा विश्व अपना हो जायेगा । इस प्रकार धर्म की बात कहकर अब शरीर के शुद्धि की बात पर श्रीहरि कहते हैं -

अगालितं न पातव्यं पानीयं च
पयस्तथा ।
स्नानादि नैव कर्तव्यं
सूक्ष्मजन्तुमयाम्भसा ॥३०॥

पानी हो या दूध विना छाने पानी नही पीना चाहिए जिसमे सूक्ष्मजीव पड गये हो ऐसे जल में स्नान भी नहीं करना चाहिए । इससे आरोग्यता बनी रहेगी । शरीर स्वस्थ रहेगी । मानसिक शांति के बाद शरीर स्वस्थता की बात श्रीहरिने की । अब कुछ व्यावहारिक नीति की बात बता रहे हैं -

स्थानेषु लोकशास्त्राभ्यां निषिद्धेषु
कदाचन ।
मलमूत्रोत्सर्जनं च न कार्यं ष्ठीवनं तथा
॥३२॥

जिस स्थान पर पवित्र कार्य होते हो, जो तीर्थ हो, नदीं हो, चौराहा हो, वृक्ष के नीचे, पुरानादेवालय, फूल-बगीचे इत्यादि में शास्त्र मर्यादानुसार मल-मूत्र का त्याग एवं थूंकना नही चाहिए । इसी तरह शास्त्रीय मर्यादा कापालन किया जाय तो अपना घर, गाँव, नगर, राज्य, देश कैसा निर्मल हो शकता है । इस के साथ सूक्ष्मजीवों की हिंसा भी न हो, भगवान की आज्ञा भी है कि जानकर किसी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए - (शि.श्लो. ११)

कस्याऽपि प्राणिनो हिंसा नैव कार्याऽत्र
मामकैः ।
सूक्ष्मयूकाऽमत्कुणादेरपि बुद्धया
कदाचन ॥११॥

गीता में भी कहा गया है "अहिंसा परमो धर्मः" जो व्यक्ति किसी प्राणी की हिंसा नहीं करता वह परमात्मा श्रीकृष्ण की अहैतुकी कृपा प्राप्त करता है - इतना ही नहीं सूक्ष्म जीवों की अहिंसा से वह परम सुख-शांतिका अधिकारी होता है, यही आध्यात्मिकता का रहस्य है । अंतःकरण की शुद्धि परहिताय - स्वसुखाय की वात श्रीहरिने की है ।

श्री सहजानंद स्वामी गढपुर में सभा में विराजमान थे । उसी समय की एक घटना है गढडा दरबार के बाहर एक कुत्ता विष्टा कर दिया था, लोगो को लगता था कि कुत्ता मर गया है - जिसकी दुर्गन्ध आ रही है, सभी आने जानेवाले उस दुर्गन्ध के कारण नाक बन्द करलेते और यह कहते कि कोईइसे साफ नही करता, इतने में एक हरिभक्त उकाभाई वहीं से निकल रहे थे, उन्होंने दुर्गन्ध का रहस्य समझ लिया और अपनी माला को एक तरफ रखकर गन्दगी को साफ करने के बाद सबस्त्र स्नान करके सभा में प्रवेश किये । उस समय श्रीहरिने कहा लो आ गये मंदिर के मालिक । धन्य हैं उकाभाई जिन्हे श्रीहरि सभा में भी खडे होकर गले लगाते थे । जिस का नाम वचनामृत में स्मरण किया गया है । ऐसे सच्चे हरिभक्तों की सेवा का स्मरण आज समाज में करके वैसा ही आचरण किया जाय तो निश्चित निष्काम भावना से निर्मल गुजरात बनने में कोई संदेह नहीं होगा ।

प्रिय भक्त जन ! यदि हम श्रीहरि के सच्चे दास हो तो श्रीहरि की आज्ञानुसार हमें इतना अवश्य करना चाहिए -

१. मंदिर आते जाते कागज या छिलका आदि किसी प्रकार की

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

सत्संग सुरभि :

ये शेरवजी तो गुलाब जैसे हैं

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

उस दिन महाराज घेला नदी में खूब नहाये । रंग खूब खेले । अंगल-बगल का वातावरण गुलाबमय हो गया । शेखमियां नामका मुश्लिम भक्त भी वहीं था । महाराज के गुलाब ने शेखमियां के दाढी को लाल करदिया । रंग खेलते हुए महाराज ने कहा कि जिसे यह रंग लगा वह भगवान की भक्ति के रंग में रंग जायेगा ।

महाराज जब दरबार में पधारे उस समय शाम ढल रही थी । प्रेमानंद स्वामी सभा में मधुर स्वर में गरबी ढंग पर कीर्तन गा रहे थे । उस मधुर स्वर से सारा वातावरण गूंज उठा था । धुनि कीर्तन पूर्ण होने के बाद कथा प्रारम्भ हुई । जैसे शरदपूर्णिमा के दिन चन्द्रमां के चारोतरफ तारागण घिरे हो, वैसे ही सारा संत समाज एवं भक्तजन सहजानंद महाराज को चारो तरफ से घेर कर अपलक दृष्टि से निहारते हुए कथा श्रवण कर रहे थे ।

इतने में शेखमियां सभा में आये । महाराज उन्हें अपने पास बुलाये और आगे बैठाये । शेखमियां गोंडल के निवासी थे । जब से श्रीजी महाराज के सम्पर्क में आये उसी समय से महाराज को अपना खुदा मानने लगे थे । इतनी निष्ठा हो गयी थी जिससे वे महाराज के पास पंच वर्तमान लेकर सत्संग के नियम पालने लगे । उनका स्वभाव बदल गया । उनका सम्पूर्ण कलेवर बदल गया । इतने आगे निकल गये थे कि भूल से भी किसी स्त्री का स्पर्श हो जाय तो स्नान करते थे । एकादशी का उपवास निर्जल करते थे ।

महाराज उन्हे अपने सत्संग में ले लिये । महाराज उन्हे शेखजी कह कर बुलाते थे । महाराज के मन में सभी समान थे, चाहे ब्राह्मण हो या मुसलमान, सभी को भगवान की भजन करने का अधिकार है । श्रीहरि सभी को प्रिय थे । सभी को उपदेश करते, सभी को कुटेव छुडाते, संयमी जीवन जीने का नियम बताते शेखमिया ऐसे सत्संग में जुड गये । वे उस सभा में आये, इस लिये महाराज ने उन्हे हार पहनाया । अपने पास में बैठाया यह कितनों को अच्छा नही लगा । सभी के मन में होने लगा कि महाराज शेखमियां में क्या देख लिये है जो इतनी उसकी आव भगत करते हैं । क्या दूसरे भक्ति नहीं करते ? या नियम का पालन नहीं करते ।

कथा के बीच में कोई कुछ नहीं बोला, लेकिन जब कथा पूर्ण हो गयी तो महाराज के निवास स्थान पर जाते ही चर्चा शुरु हो गयी ।

शेखजी जिस स्थान पर बैठे थे उस स्थान को झाडते हुए किसी ने कहा इनके घर का पानी भी कोई नहीं पीता है ।

उस दिन जीवुं बा मिठाई बनाकर लाई थी । महाराज सभी को प्रसाद दे रहे थे । उस समय भी शेखजी रंगमें भंग डाले थे । महाराज से तीन बार प्रसाद लिये थे । सत्संगियो के साथ रहकर भक्ति करना बडा कठिन काम है । तलवार की धार पर चलने के बराबर है । फिर भी जब कथा होती तब आगे आकर बैठ जाते है - यह कैसे चलेगा ?

शेखमियां के विरुद्ध इस प्रकार कितनी चर्चायें हो रही थी । ये सभी की मनोदशा का आकलन महाराज मन ही मन किये जा रहे थे ।

एकदिन सभा में श्रीजी महाराज ने पास बैठे हुए शेखमियां से कहा - आप मुझे मारिये इस प्रकार महाराज ने कभी किसी को कहा नहीं था । शेखजीने महाराज को ध्यानपूर्वक देखा, कुछ नवीन लगा, उन्हें लगा कि हमसे कोई भूल तो नहीं हुई है ? इतने में महाराज ने पुन: कहा शेखजी आप के हाथ की हमें मार खानी हैं, हमें आप मारिये । महाराज आप कहें तो हम आपकी पूजा करें, आरती उतारुं, आज्ञा का पालन करुं, लेकिन मारना ।

आज्ञा पालन करुँगा ऐसा विचार नहीं आया, जो आप मारने के लिये कह रहे हैं ।

लेकिन आज मजाक की वात नहीं थी । महाराज सभा में शेखजी का हाथ खींचकर मारने को कह रहे थे । ऐसा क्यों कह रहे हैं महाराज ? मैं गरीब हूँ मैं यह नहीं कर सकता । महाराज भीअडिग थे । बस एक ही बात-हमें मारो । सम्पूर्ण सभा स्तब्ध होकर देख रही थी । आप को एक बार कह दिया तो शेखजी आप क्यों नहीं मारते ? बडे कड़क शब्द में महाराज ने कहा ।

अन्त में शेखजी महाराज के चरण में गिर कर कहने लगे महाराज ! अब बस करिये । यह हमसे कभी नहीं हो सकता

फिर भी आप की आज्ञा पालन करने के लिये मारता हूँ। ऐसा कहकर शेखमियां अपना बांया हाथ मारने के लिये उठाये कि तुरंत महाराज का तेवर बदल गया और चिल्ला कर काठी दरबारों से कहने लगे, इन्हे धक्के मारकर बाहर निकाल दो।

यह सुनते ही काठी दरबार शेखजी के चारो तरफ घेर कर खड़े हो गये एवं मारते हुए बाहर कर दिये। सब बोलने लगे कि महाराज के सामने इन्हें बडा बनना है। तुम्हारा भीतर एवं बाहर क्या है हम सब जानते हैं। अब कभी फिर यहाँ आये तो खैर नहीं। शेखजी तो थर-थर कांप रहे थे।

शेखजी को थोड़ी भी इसकी वेदना नहीं हुई - वे दूर खडे होकर महाराज का दर्शन करते रहे गये नहीं क्योंकि उनके मन में ऐसा था कि यह सब महाराज की आज्ञा से हुआ है। इसलिये खेद या क्रोध नहीं आयी।

दोपहर का समय हुआ सभी भोजन के लिए बैठे उस समय शेखजी भी एकतरफ बैठ गये। उसी समय महाराज भी वहाँ से निकले शेखजी को देखे और कहे कि इनको यहाँ किसने बैठाया। इनके भोजन में धूल डाल दो ? इतना सुनते ही काठी दरबारो ने खीर में तथा भोजन में धूल डाल दी।

यह देखकर किसी को दया आयी तो उन्हें कहा कि शेखजी अब यहाँ से चले जाइये अन्यथा ये सब आप को सुख से जीने नहीं देंगे।

शेखजी महाराज की बात समझ गये कि महाराज हमें अभी दूर रखना चाहते हैं। इसलिए वहाँ से चल दिये। गोंडल जाकर हठीसिंह के दरबार में नौकरी करने लगे। इसी समय महाराज ने सन्देश भेंजा की हठीसिंह शेखमियां को आपने नौकरी दिया है वह मुझे मारने के लिये कहता है। यह सुनते ही हठीसिंहने शेखजी को नौकरी में से निकाल दिया।

इस वात को बीते करीब पंन्द्रह दिन होंगे। एक दिन शेखजी राजकोट जानेवाले मार्ग पर पैदल चले जा रहे थे उसी समय घोडे पर सवारी किये हुए दादा खाचर निकले शेखजी को देखते ही बोले अरे शेखजी ? आप तो महाराज के साथ दरबार में रहते थे, यहाँ कैसे ?

शेखजी बडी प्रसन्नता के साथ कहने लगे कि "महाराज ने हमें कितना सुख दिया है। महाराज कारियाणी में दोबार गले लगाये थे। कई बार सभा में आगे बैठाये। हटने भी नहीं देते थे। जन्माष्टमी के उत्सव में तो कहने की कोई बात ही नहीं, किसी दिन मोतीचूर के लड्डू तो किसी दिन खीर तो किसी दिन बरफी स्वयं महाराज परस के खिलाते थे। इतना प्रेम कि सभी के हृदय में बैठे रहते। बस आप इतना कीजियेगा कि जब महाराज मिलें तो मेरा जय स्वामिनारायण कह दीजियेगा। वे तो परम दयालु है, मेरे अपराध को ध्यान में न रखें, कभी इस दास को अवश्य दर्शन दें - ऐसा कहते कहते हृदय भर आया।

दादा खाचर ने समझ लिया कि शेखजी तोकांच की तरह अत्यन्त निर्मल हैं। महाराज ने एवं भक्तों ने इतना अपमान किया तो भी किसी के प्रति खराब भावना नही, सीताजी की तरह इनकी समझ है। महाराज के प्रति हृदय में असीम भक्ति का समुद्र लहरा रहा है। दादा खाचर ने तुरंत ही पत्र लिखकर पत्र वाहक को महाराज के पास भेंज दिया महाराज भी पत्र लिखकर वापस किया कि शेखजी के ऊपर हमारी असीम कृपा है आप कोजो योग्य लगे वह कीजिए।

दादा खाचरने कहा "कलहम गढडा जाने वाले हैं आपको आना है ?"

मैं कैसे आ सकता हूँ, विना महाराज की आज्ञा के ? आप विश्वास कीजिये, आप के ऊपर महाराज बहुत प्रसन्न हैं। इस लिए निश्चिंत होकर मेरे साथ चलिये।

शेखजी को पता था कि दादा खाचर महाराज के प्रिय पात्र हैं। इसलिये इनका कहना ठीक है। घोडे पर बैठकर दोनो गढडा के लिये चल दिये। गढडा की सीमा आई तो शेखजी घोडे से नीचे उतर गये।

वही दरबार, वही दालान, वही प्रसन्न मूर्ति श्रीजी महाराज। दूर से ही शेखजी को आते देखकर महाराज सिंहासन छोडकर दौड पडे। शेखजी को अपने गले से लगाये। गुलाब का विशाल एक हार उनके गले में डाल दिये। थोडे समय तक प्रेम के वश सब सुध बुध भूल गये थे। बाद में हाथ पकडकर सभा के बीच से अपने आसन के पास लेजाकर बैठाये। सभा को सम्बोधित करते हुए कहे कि - अब तोसभी का संदेह मिट गया होगा।

उस समय सभी को यथार्थ का ज्ञान हुआ कि हम शेखजी को गुलाब का करंट मानते थे, यद्यपि शेखजी तो गुलाब के समान कोमल हैं। जिसे मात्र महाराज के प्रति ममता प्रेम हो उसके लिए सारा जगत बैरी हो तो क्या ! शेखजी जैसे भक्तजन ही महाराज के करकमल में गुलाब जैसे हमेंशा निवास कर सकते हैं।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

स्वभाव छोडना सीरवो

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

एक गृहस्थ स्वाद का बहुत प्रेमी था । नाना प्रकार के मसालों की डिब्बी भर रखता था । किसी डिब्बी में गरम मसाला, तो किसी में अन्य प्रकार के मसाले, जब भोजन के लिये बैठे तब सभी सामान लेकर बैठता, भोजन के ऊपर भर-भराकर ही भोजन करता । ऐसे स्वादवाले को वैराग्य हो गया । मुझे अब सन्यास लेना है । उसने घरवालों से आज्ञा मांगी । घरवालों ने कहा हाँ..... हाँ..... ले लो हमारा उद्धार करना । वह भाई यथार्थस्म में सन्यासी हो गया । बाद में गाँव-गाँव फिरने लगा । जो कोई आमंत्रण देता उसके यहाँ भोजन करने पहुँच जाता और घूमता रहता । लोगों को उपदेश देता कि आप सभी भगवान की भजन करना । भगवान के सिवाय सभी मिथ्या है । इत्यादि ।

वही सन्यासी एक दिन भिक्षा मांगते अपने ही गाँव में पहुँच गया । अपने ही गाँव में आया हुआ देखकर गाँव वासी भोजन के लिये आमंत्रण दिये । यह क्रम प्रायः सभीके घर चालू हो गया । आज इनके घर तो कल उनके घर ।

एक दिन उनकी पत्नी के कान में भी यह वात आयी कि वे गाँव में सभी के आमंत्रण पर भोजन के लिए पधारते हैं तो मैं भी उन्हें घर बुलाकर भोजन कराऊँ । वह भी जहाँ वे रुके थे वहाँ जाकर भोजन के लिए आमंत्रण देकर आ गयी । समय होते ही पत्नी के घर सन्यासीजी भोजन के लिये गये । सभी पैर स्पर्श किये । सभी का हाल समाचार सन्यासी जी पूछे । पत्नी रसोई में भोजन पिरसने गयी । पत्नी की अच्छी स्थिति नहीं थी । फिर भी युक्ति के अनुसार रोटी-सब्जी बनायी थी । रोटी सादी, सब्जी उबाली हुई । नमक, मर्चा, तेल, मसाला कुछ भी नहीं । थाली सामने परोस कर लेआई देखते ही सन्यासी ने समझलिया कि इसमें कुछ नहीं है । अपनी थैली खोली-जिस में घी, मसाला भोज्य नाना प्रकार की सामग्री थी । रोटी में घी लगाये, सब्जी में नमक मसाला छिटके स्वादिष्ट बनाकर भोजन करने लगे । पत्नी को हुआ कि ये तो सन्यासी हो गये फिरभी स्वाद तो गया ही नहीं । इन्हे बताना पडेगा ।

वह सन्नारी अपना कर्तव्य समझकर कहने लगी, आप घर संसार को छोडकर सन्यासी हुए फिर भी गृहस्थ की तरह थैले में लेकर घूमते हैं । आपके थैले में केवल मैं नहीं हूँ, बाकी सब कुछ तो है । पहले जैसा ही स्वभाव, वैसा ही स्वाद, थैले में मसाला लेकर घूमने की आदत । सही तो यह कि इन्हीं सभी आदतो को छोडना, अपने स्वभावमें परिवर्तन लाना ही संसार का त्याग करना है । स्वाद जब तक नहीं छूटे तब तक संसार छूटेगा ही नहीं । त्याग का अर्थ है, भगवान के भक्त की तरह स्वभाव के वस हुए विना भगवान की भक्ति करना । भगवान को यही अच्छा लगता है । इसीलिए कहा गया है -

संसार मां सरसो रटे, मन मारी पास ।
संसार जेने लोपे नही, तेने जाणु मारो दास ॥

•

जगत के जीवों को सत्संग अच्छा नही लगता

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक छोटा सा गाँव था । गाँव का नाम लेते ही सभी को आनंद आता था । गाँव के बाहर कूँआ होता है, गाँव का मकान कच्चा होता है । थपुआ-नरिया से बना मकान अच्छा लगता है । प्रत्येक मकान के आंगन में गाय, भैंस, बैल इत्यादि पशु बांधे रहते हैं । सभी अपने ढंग से आनन्दमय जीवन जीते हैं । ऐसे गाँव की बात है ।

इस गाँव में प्रजापति ज्ञाति के लोग अधिक संख्या में रहते थे । उसमें एक प्रजापति ऐसा था कि वह सभी से कहता फिरता था हम खेती भले करे लेकिन अपने धंधे को कभी न छोड़ें । प्रजापति के बाप दादा का वारसा क्या होता है आप सभी जानते हों ? मिट्टी के पात्र बनाना । मिट्टी के वर्तन बनाना ही पैत्रिक परम्परा । जिस प्रकार भगवान मनुष्य का सर्जन करते है वैसे ही कुम्भकार घड़ा बनाता है ।

वह प्रजापति एक गधे को भी अपने घर में बांध रखा था । कोई पूछता आप घर में क्यों गधे को बांधे है । वह कहता खेती का काम जब पूरा हो जायेगा बाद में उस गधे की उपयोगिता होगी । वह प्रजापति अपने

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

!! भक्तिसुधा !!

गुरु से ही ज्ञान

- रमीलाबहन के. मोदी (हिंमतनगर)

प्रांतिज मंदिर में घनश्याम महाराज के शताब्दी महोत्सव प्रसंग पर बडे महाराजश्रीने आशीर्वचन में कहा कि पढते - पढते युनिवर्सिटी तक पहुंचे हो, वहाँ तक एक के बाद एक डिग्री मिलती जाती है । उसे एकत्रित करते जाते हैं । जब कि धर्म में जबतक सत्संग करते रहते हैं तब तक डिग्री मिली रहती है, जब सत्संग छोड़ देते हैं तो डिग्री वापस लेली जाती है ।

गुरु कुंभकार हैं । शिष्य कुंभ है । कुंभकार घडाबनाते समय जोआकार देना चाहता है, धीरे धीरे ऊपर से पीटता रहता है लेकिन एक हाथ भीतर डालकर बडी सहलाई के साथ सहयोग भी करता रहता है । इसी प्रकार गुरु भी ऊपर से गंभीर रहकर भीतर से प्रेम करते रहते हैं ।

जो शिष्य अपने गुरु की निंदा करता है वह आकाश में जबतक सूर्य-चंद्र है तब तक नारकीय यातना भोगता है । इसलिये प्रत्येक गृहस्थ अपने गुरु की पूजा देव की तरह करें । निष्कुलानंद स्वामी कहते हैं कि

गुरु कृपाए सुख पामिए,
गुरुकृपा ए उपजे ज्ञान ।
निष्कुलानंद गुरु कृपा करे,
तो आपे अविचल धन ॥

गुरुकृपा अपने ऊपर होजाय तो भक्ति सभी अनेको सुख प्राप्त होजाते हैं । भक्ति प्राप्त होते ही ज्ञान भी मिलजाता है । अज्ञानरूपी अंधकार भी अपने आप नष्ट होजाता है ।

जेम चंदन वांसे वृक्ष बीजा चंदन
सरीखां थाय छे.
तेम श्रीहरिना संबंधथी
संतकल्याणकारी कहेवाय छे ॥

इस प्रकार त्यागाश्रमी तथा गृहस्थाश्रमी दोनो प्रकार के गुरु श्री स्वामिनारायण भगवानने धर्मवंशी आचार्य को बनाया है । यही सच्चे गुरु हैं । श्री स्वामिनारायण भगवानने एक ही अपने स्थान पर आचार्य पद, गुरुपद, उपदेष्टापद धर्मवंशी आचार्य में स्थापित किया है । इतना ही नहीं जो धर्मकुल के आश्रित रहेंगे उनका आत्यंतिक कल्याण अवश्य होगा ।

शास्त्र में कहे सभी गुण गुरु में हों लेकिन धर्मकुल का न होतो मोक्ष चाहने वाले ऐसेको कभी गुरुनहीं बनावें । उसमें भी जो दोनो मूल गादी संस्थान की गादी पर प्रतिष्ठित होना चाहिए । (सत्संगिजीवन प्र.४, अ.४६, श्लोक २३)

धर्मवंश के दोनो गादीवाला आचार्य के अलांवा अन्य मतवालें किसी विशेष गुण से अधिक हों तो भी धर्मवंश की परम्परा एवं गादी विशेष की परम्परा होनेके कारण भगवान श्री स्वामिनारायण की ऐसी आज्ञा है कि गृही-त्यागी दोनों ही बहने गादीवाला के सिवाय अन्य को गुरु न माने । इसके साथ उनकी मन-वचन-कर्म से आज्ञा का पालन करें । इसके अलांवा जो कोई अन्य का आश्रय ग्रहण करेंगी उसका इस लोक एवं परलोक में कल्याण नहीं होगा । अंत में कष्ट भोगना पडेगा । श्री स्वामिनारायण भगवानने इसीलिए शिक्षापत्री श्लोक ७१ में आज्ञा की है कि "हमारे आश्रित सत्संगी अपने आचार्य सेकभी विवाद न करें ।"

"धर्मवंशी आचारज मांय रे,
सदा रह्योछुं मारी इच्छाये रे ।
एथी अमे अलगा न रेये रे,
एमा रही दर्शन दइये रे ॥"

जिस मनुष्य को भगवान के अविचल भक्ति हो एवं जो गुरु की आज्ञानुसार चलता है । इसके साथ जो गुरु में अटूट श्रद्धा रखता है वह पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण का साक्षात् दर्शन कर शकता है ।

भगवद् गीता के प्रारम्भ में धृतराष्ट्र अपने मंत्री संजय से पूछते हैं कि कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल में क्या हुआ ? गुरुदेव व्यास की कृपा से संजय के हृदय से समग्र घटना का स्फुरण होता था । जिस कारण समग्र युद्ध घटना का वे याथातथ्य वर्णन कर शकते थे । यह संवाद अद्भुत था । क्योंकि पूर्णपुरुषोत्तम श्री कृष्ण नारायण एवं अर्जुन का यह संवाद था । यदि हम श्रीकृष्ण को समझने के लिये अर्जुन का अनुकरण करते तो हमारा जीवन भी सुखी हो जाता । संजय को इसका ख्याल जितना अधिक आता उतना ही वह धृतराष्ट्र को समझाते जाता था ।

व्यासजी संजय के गुरु थे । इसवात को संजय स्वीकार करता है कि व्यासजी की कृपा से ही हम पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण को पहचान शके । इसका अर्थ यह है कि परमात्मा को समझने के लिये या पहचानने के लिए गुरु की महती आवश्यकात है । माध्यम तो होना ही चाहिये । गुरुपारदर्शक माध्यम है । जिस प्रकार अर्जुन भगवान को पहचान शका, उसी तरह संजय भी परमकृपालु गुरु की कृपा से भगवान संजय को पहचान शका । गुरुभी व्यासजी का प्रतिरूप होते हैं । इसलिए वैदिक विधि के अनुसार गुरु के जन्मदिन पर शिष्य व्यास पूजन का उत्सव मनाते हैं ।

एक शहर के एक मंदिर में एक साधु रहते थे । उनके साथ एक शिष्य भी रहता था । साधुका व्याख्यान सुनने के लिए बड़ी भीड़ एकत्रित होती थी । परिणाम स्वरूप खूब भेंट पूजा मिलती थी । परंतु साधु शहर छोड़कर चले जाने की वात

करते थे । शिष्य इनकम देखकर लालच करने लगा । वह कुछ दिनऔर रुकने के लिए कहा, परंतु गुरुजी माने नहीं । अंत में गुरुके साथ शिष्य कोभी शहर छोड़ना पडा । वह बडे क्रोध में था इसलिए जितना धन था सब साथ में लेलिया । गुरुजी कुछ भी नहीं लिये ।

रास्ते में एक नदी आई । दोनो नाँव में बैठे । बीच में नाव फंस गई और डूबने लगी । शिष्य को तैरने नहीं आता था । गुरुजी अच्छी तरह तैरना जानते थे । वे शिष्य की जान बचाकर किनारे लाये । गुरुने कहा धन की लालच बुरी है, तुम्हे भवसागर पार करना होतो लालच छोडना होगा । संसार की नदी पार करनी होतो तैरना सीखले । ज्ञान-वैराग्य विना यह नदी पार करना संभव नहीं है ।

राजबाई

- लीपा पटेल (हरभोला पार्क)

राबजाई को माता-पिता सत्संगी थे । स्वयं मुक्त थी इसलिए जीवुबा की तरह भजन भक्ति किया करती थी । युवावस्था होते ही उनके विवाह की वात चलने लगी थी । उन्होंने माता पिता से कहा कि हमे विवाह नहीं करना है । इस वात को पिताने महराज से कह दिया ।

महाराज ने राजवाई से कहा कि लोक मर्यादा के लिये आप विवाह करलो । आप की टेक सच्ची होगी तो भगवान आपकी रक्षा करेंगे । महाराज की आज्ञा से हाँ कर दी । राजबाई का विवाह निश्चित होते ही मांने कहा तुम्हारी चुंदडी आ गयी । यह शब्द सुनते ही उनके मुख सेनिकला कि "जले आपकी चुंदडी" इतने में वह चुंदडी जल गयी । बाद में विवाह हुआ वे पति के घर गयी । पहली रात्रि में ही पति को सिंहनी जैसी दिखाई दी, वह वापस आकर सभी से कहा कि हमारा हित आप सब चाहते हों तो इन्हें वापस भेंद दो । ये असाधारण महिला हैं । बाद में इन्हे पिता के घर लाया गया वहाँ से गढडा श्रीहरि की सेवा में जीवुबा आदिक महिलाओं के साथ रहने लगी । पुरुष से २० हाथ दूर रहती थी । किसी गृहस्थ स्त्री के पेट में बालक होतो उसे वे जान जाती और कहती तूं दूर रहना तेरे पेट में बालक है ।

उनके मन में महाराज को प्रसन्नकरने की ही एकमात्र भावना रहती । वचनामृत में राजबाई का प्रश्न था कि "आप किस क्रिया के करने से प्रसन्न होते हैं ? महाराज ने कहा कि हम त्याग से विशेष प्रसन्न होते है ।

स्वयं वह दादा खाचर के मौसी की लड़की थीं । अंतकाल में दादा खाचर को बुलाकर कहीं कि मेरे मरने के बाद मेरी अर्थी को कोई पुरुष स्पर्श न करे । बाद में स्त्रियों ने अग्नि संस्कार करना प्रारम्भ किया लेकिन अग्नि प्रज्वलित नहीं हो रही थी, उस समय गोपालानंद स्वामीनेकहा हे अग्निदेव ! सती तो अब चल गयी अब आपको स्वंय दहन करना है । बाद में अग्निदेव शब को जलाने लगे । ऐसी वे पवित्र सतीथी कि जिस के स्पर्श के लिए स्वयं अग्निदेव भी डरते थे ।

न गई गंगा गोदावरी

- रमाबहन सानी (लींबडी)

पूर्वनुं पुण्य प्रगट थयुं ज्यारे,
स्वामिनारायण मणिया रे त्यारे ।

एक समय की वात है भगवान स्वामिनारायण प्रातःकाल भाग के गाँव से घूमते हुए तालाब के किनारे पहुँचे वही पर स्नान किये । उस समय महाराज ने सुराखाचर से कहा कि बबूल की दातोन मिले तो किया जाय, यह सुनते ही सुरा खाचर गाँव में गये वहाँ एक मुसलमान की पत्नी दरवाजे पर बैठी थी उससे पूछे कि यहाँ बबूंल की दातोन मिलेगी क्या ? उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस भाल प्रदेश में ऐसा कौन है जो बबूल की दातोन मांग रहा है । सुरा खाचर ने कहा भगवान हैं । यदि भगवान हैं तो मैं देती हूँ ।वह अपने घर के आंगन में जिसे सींचकर बडा की थीं इसमें केवल एक ही दातोन बन शकती थी, उसे काटकर भगवान के लिये सुराखाचर के हाथ में उस मुश्लिम महिलाने दे दिया । इतना ही नही वह सुरा खाचर के साथ भगवान का दर्शन करने आयी । भगवान दातोन करके स्नान-सन्ध्यादि विधि के बाद जब चलने लगे तब मुश्लिम महिलाने कहा हे प्रभु यदि सहीं आप खुदा है तो मेरा ख्याल रखना ।

श्रीजी महाराजने कहा अच्छा हम जरुर ख्याय रखेंगे । उस बीबी के अंत समय स्वयं श्री स्वामिनारायण भगवान उसे लेने आये । बाईने कहा स्वामिनारायण आप कौन हैं ? महाराजने हाथ में दातोन बताते हुए कहा कि मैं ही तेरी दातोन किया था जिससेतुमने कहाथा कि मेरा ख्याल रखना तोआज अंतकाल में तुम्हें मैं हीं लेने आया हूँ । भगवान स्वामिनारायण उसे अक्षरधाम में ले गये । विचार यह करना है कि केवल दातोन देने मात्र से एक मुश्लिम महिला का महाराज कल्याण कर शकते हैं तो जो भगवान को अन्न-वस्त्र-भोजन अर्पण करे तो उसका क्या होगाा । इसलिये देव संत आचार्य की सेवा करके अपना कल्याण करलेना चाहिए ।

न गई गंगा गोदावरी काशी,
घर बैठा मलीया अक्षरवासी ।
तप रे तीरथमां हुं कांई न जाणुं,
सहेजे सहेजे हूँ तो सुखडा रे माणुं ॥

जतनबाई

- ध्वनि पटेल (हरभोला पार्क)

उत्तर गुजरात के डांगरवा गाँव में वेणीभाई पटेल की पुत्री जतनबाई रहती थी । श्रीहरि की अन्योपासिका थीं । महाराज अनेकों बार डांगरवा पधारकर

इनके घर अनेकों लीला किये थे ।

एकबार ऐसी चर्चा हुई कि करजीसण जायें कि अन्यत्र तब जतनबाई ने कहा जिसे मेवा-पक्वान का स्वादलेना हो वह करजीसण जाय। जिसे दूध-दही का स्वाद लेना हो वह डांगरवा जाय । बाद में तो अनेको संत-हरिभक्तों के साथ महाराज डांगरवा पधारे । लोया में महाराज जिस प्रकार शाकोत्सव किये थे वैसा ही डांगरवा में लौकी उत्सव किये। संत की पंक्ति में दही को परसे । दूसरे घी की नदी भोजन में बहा दिये ।

महाराज ने कहा मैं सब कुछ तेरा खत्म करके जाऊँगा । बा ने कहा आप के स्पर्श से कभी कम नहीं होता सब भरा का भरा है । दूध-दही की आप नदी बहा दीजिए तो भी कोई कमी नहीं । महाराज वहाँ आठ दिन स्के रहे। दूध दही का खूब आनंद सभी ने लिया। ब्रह्मानंद स्वामीने लीलाचरित्रो का कीर्तन गया

एक दिन महाराज भोजन करके बैठे थे । जतनबाई दूध में केशर-इलायची डालकर लाई निवेदन करते हुए कहीं कि इसे पी लीजिये, महाराज ने कहा अभी भोजन करके उठे है । तब बाने कहा आपने कहा था कि सब खत्म करके जायेंगे । अभी तो सभी भरापडा है । भगवान भक्ता के वश में होकर दूध पीगये ।

एकवार गाँव के लोगोंने कहा कि महाराज बरसात नहीं होगी तो खेती नहीं होगी । तब महाराजने कहा ये जतन बा महान संत है इनकी इच्छा हो तो बरसात हो शकती है। बाद में जतन बा के कहने से बरसात हो गयी । इस प्रकार भगवान भक्तों की महिमा को बढाते थे । इस प्रकार जतन बा महामुक्ता थी । उनका घर एवं स्थल वैसा का वैसा हीं है ।

धमडका में करणीबा एवं रायधणजी दरबार के घर श्रीहरि

- श्रीमती पुष्पाबहन केराई (अंजार-कच्छ)

श्रीजी महाराज मांडवी में खैया खत्री को प्रसन्न करके अन्य को सत्संगी बनाकर गंगाजी में स्नान करके ब्रह्मदेवेश्वर महादेव का दर्शन करके, भुज में लाभी दाई एवं माताजी को दर्शन देकर, सुन्दरजीभाई के यहाँ भोजन करके थोडा आराम करके अंजार होते हुए धमडका में आकर रात्रि आराम किये ।

धमडका में रामानंद स्वामी के समय की करणी बा एवं रायधडजी दरबार स्वामिनारायण भगवान के प्रिय भक्त थे । उस समय धमडकां गाँव उत्तम व्यापार का केन्द्र था । निवासी लोग भी अच्छे थे । कच्छ के अलग-अलग विस्तार में यहाँ व्यापारी व्यापार करने आते थे ।

इस शहर के बाहर एक पाठशाळा में कंडा वृक्ष के नीचे संस्कृत का अभ्यास करने वाले खाडगाँव (राजस्थान) के लाडुदान गढवी गढडा में प्रभु की सेवा में बहुत समय तक थे । प्रभु के कई कीर्तनो को बनाया था । बाद में प्रभु के पास महादीक्षा लेकर ब्रह्मानदं स्वामी के नाम से सत्संग में प्रतिष्ठित हुए थे ।

धमड़का में प्रायः प्रभु पधारते रहते थे। प्रायः करणीबा के घर ही रहते थे । कभी-कभी रायधणजी के यहाँ निवास करते थे । वहीं से अगल बगल के गाँवो में मुमुक्षुओं को सद्उपदेश देकर अलौकिक सुख देते । नजदीक में स्थित कुण्ड में जाकरः प्रतिदिन प्रातः स्नान करते थे । वही कालान्तर में उन्मत्तगंगा के नाम से प्रसिद्ध हुआ । आश्चर्य की बात तो यह कि कितने दुकाल पड़े लेकिन यह कभी सूखा नहीं ।

सायंकाल करणीबा के दरबार में सभा लगती थी । वहीं पर सत्संगी के सिवाय भी लोग आते थे । कुछ संत अगल बगल के गाँवो में जाकर व्यसन मुक्ति का अभियान चलाते । प्रतिदिन घर घर में संतो के साथ प्रभु भोजन के लिए पधारते धमडका, दुधई, इसके साथ अगल बगल के विस्तारों में प्रभु जाकर अनेंको को व्यसन से मुक्त किया था । अनीति के आचरण से शभी को रहित किया । सभी नीतिमय जीवन जीने के व्यसनी हो गये । पानी गारकर पीने लगे । जूआ, मदिरा, मांस इत्यादि दोषो से सभी को मुक्त किया । विवाह में सुन्दर नंद-संतो द्वारा रचित गीत गवाये, विभत्स गीतों को बंद करवाया । चोरी धन्धा बन्द करवाया । लोग खेत मजूरी करने लगे । इस गाँव में करणी बा एवं रायधणजी दरबार का स्वामिनरायण के आगमन से काफी प्रभाव पडा था । मान सन्मान भी लोगों मे बढ गया था । स्वामिनारायण भगवान की उनके ऊपर अति कृपा थी।

एक बार गाँव के अग्रणी सत्संगी करणीबा तथा रायधणजी प्रभु के दर्शनार्थ गये थे धमड़का में मंदिर बनाने का निवेदन किये । प्रभु उनकी भावना का संमान किये और कहे कि आप सभी यहाँ से अपना व्यापार धंधा अंजार-भुज की तरफ ले जायं, अपना निवास सभी वहीं बनावे, यहाँ सन्निकट भविष्य में भूकंप आनेवाला है, इसलिए हम भी भुज में ही मंदिर बनावें जो आप सभी के श्रेयार्थ होगा । भगवान स्वामिनारयण की आज्ञा होते ही सभी लोग शहर छोड़कर चल दिये ।

"गोपी बन्या गिरधारी"

एक बार धमडका की महिलाओ के साथ महाराज को विनोद करने की इच्छा हुई । परिणाम स्वरूप वहाँ की करणीबा की फूआ के विवाह प्रसंग पर महाराज ने स्त्री के वेश को धारण किया । आंख में काजल, कान में कुंडल, हाथ चूडी, पैर में पायल, नकली बाल, माथे में सिन्दूर डालकर जहाँ स्त्रियाँ बैठी थी वहीं जाकर चुपचाप बैठ गये । थोडे समय तक तो किसी को ख्याल भी नहीं आया। बहुत सारी स्त्रियां आपस में बात करने

लगीं कि इतनी सुन्दर स्त्री कौन है। किसी को ख्याल नहीं आया तो सभी ने करणीबा को पूछा, करणीबा भी बडे ध्यान से देखने के बाद ना करदी। घरपक्ष वालों से पूछने पर जब ख्याल नहीं आया तो बाराती पक्ष से पूछा गया वे लोग भी इतनी स्मावली महिला तो पहली बार देखे पहचानने से इनकार कर दिये।

लग्न मंडप में इतनी रुपवती स्त्री कौन है, कहाँ से आयी है जब कीसी को ख्याल नही आया तो सारे गाँव में यह बात वायुवेग से फैल गयी। गाँव की महिलायें आयी सभी नाना विध प्रश्न पूछने लगी, आप कौन है ? कहाँ से आयी हैं ? किसके आमंत्रण पर आयी है ? बहुत गहराई से विचार करने के बाद करणीबाने सभी महिलाओ को हटा कर प्रभु को भीतर ले गयी और सभी स्त्री वेश उतारकर प्रभु के स्वस्म में करते हुए कही कि इससे अधिक विलम्ब होगा तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा। करणीबा के इस प्रयाश पर प्रभु की लीला सिमट गयी।

समय बीतते करणीबा के मुख से प्रभु के इस लीला का सुन्दर कीर्तन बना "गोपी बन्या गिरधारी" आज समग्र गुजरात में इसकी कैसेट बिकती है।

पृष्ठ ११ से आगे.....

सदाचार धर्म का श्रीहरि का संदेश

गन्दकी नहीं करनी चाहिये। किसी निश्चित स्थान पर डालना हितावह है।

२. घर से निकलने के बाद जहाँ कहीं मल-मूत्र त्याग नहीं करना, जहाँ व्यवस्था हो वहाँ करना।

३. पडोशी के सामने या अगल-बगल गन्दगी नहीं करना चाहिए। घरमें भी गन्दगी नहीं करेंगे, कचडे को कचडा की पेटी में डालेंगे।

४. बाहर की कोई वस्तु तली हुई नहीं खायेंगे विशेष ठेले की वस्तु का उपयोग नहीं करेंगे।

५. मैं सहजानंद स्वामी का सेवक हूँ। इसलियए श्रीहरि की आज्ञानुसार वर्तन करते हुए यत्र तत्र कूडा-कर्कट नहीं फेंकेंगे। यदि कहीं गन्दगी होगी तो उसे साफ करने की कोशिष करेंगे।

सभी सत्संगी जीवन में उपरोक्त वातो पर विचार करें तो श्रीहरि की आज्ञा "पर हिताय - स्वसुखाय" धर्म के हम भागीदार बनेंगे। "अहिंसा परमो धर्मः" के परम सुख को प्राप्त करेंगे इस में कोई संशय नहीं है। "निर्मल गुजरात" बनाने में भागीदार बनेंगे। इसी में श्रीहरि की एवं प.पू. आचार्य महाराजश्री की तथा संतो की प्रसन्नता छिपी हुई है। यही हमारा "सदाचारः प्रथमो धर्मः" है।

पृष्ठ १४ से आगे.....

सत्संग बालवाटिका

घरमें चार बैल भी रखा था। इसके साथ दो भैंस भी रखा था। इतने पशुओं को वह रखता था। जितनी सेवा बैल-भैंस की करता उनती ही सेवा गधे की करताथा। लेकिन आश्चर्य कीबात तो यह कि सेवा सभी की समान थी बैल-भैंस खूब स्वस्थ थे, पर गधा उत्तरोत्तर सूखता जा रहा था। पशु डोक्टर के बताने के बाद भी वह दुबला का दुबला। अब उस प्रजापति को चिन्ता होने लगी। पूरे गाँव में मैं ही गदहा रखा हूँ सायद लोगो ने नजर लगादी होगी ? कोई भूत पकड लिया होगा ? इसलिए नानाविधि उपचार प्रयोग भी करवाया। फिरभी वैह जैसा का तैसा। बाद में प्रजापति को दुःख होने लगा। एक दिन उस गाँव में एक वृद्ध को प्रजापति के घर का समाचार मिला वह स्वयं चलकर उसके घर आया और कहने लगा आप परम्परा चलाने की बात करते हैं लेकिन यह क्या गधेको रखने ही नहीं आता। मेरे साथ इस गधे को लेकर चलिये। गधा उठ ही नही सकता तो आपके साथ लेकर कैसे चलेंगे। अच्छे हैं आप, स्वयं वृद्ध उस गधे के पास जाकर पैर का अंगूठा लगाया कि गधा खड़ा हो गया। उसे लेकर साथ चल दिये। जहाँ खूब घास थी वही उसे छोड़ दिये और उस वृद्ध ने कहा अब आप चार दिन के बाद यहाँ आईयेगा। यहीं पर इसे प्रतिदिन छोड दीजिएगा। फिर देखियेगा इसका स्वास्थ्य। बैल-भैंस की तरह इसके सेवा की जरुरत नहीं पडेगी।

जिन जीवों को जगत में विषय में हीं आनंद आता हो, भजन, भक्ति, सत्संग, कथा-वार्ता, सेवा, संस्कार में उत्साह नहो उन जीवो के लिए निष्कुलानंद स्वामी भक्त चिंतामणी में लिखे हैं कि सुखसानुकुलता ही उनके लिये दुःखदायक होती है। इसी प्रकार जगत के जीवों में भी समझना चाहिये। भगवान में प्रीति होना, भगवान के गुण-चरित्र, ऐश्वर्यादिक में मन नहीं लगता है। भगवान की भक्ति करते हुए भी दुःखी होते हैं। कारण यह कि वे अभागी जीव हैं।

तेम अभागी जीव ने,
यश हरिना झेर छे।
खोटी बात मां मन खूंचे,
साची वात शुं वेर छे॥

?????????????? प्रश्नपेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ छोटी उम्र में मायाराम भट्ट विधुर हुए थे, इसलिए संबन्धियोंने आग्रह करके पुनः विवाह के लिये कहा तो मयाराम भट्टने क्या कहा ?

प्रश्न : २ धर्मकिसे कहते हैं ? यह शिक्षापत्री के किस श्लोक में लिखा है ?

प्रश्न : ३ जिस प्रकारअपने सगे संबन्धी हों, या माँ-बाप हों, उनके प्रति अपनापन रहता है, इसी प्रकार भगवान के भक्त का दृढ पक्ष रखना "यह बात महाराजने वचनामृतमें कहा कही है ?"

प्रश्न : ४ यं यं वाऽपि स्मरन्भावं, त्यजन्त्यन्ते क्लेवरम्: । तं तमेवैतिकौन्तेय, सदा तद्भाव भावितः ॥ भगवान श्रीकृष्णने गीता के किस अध्याय में यह श्लोक कहा हैं ? इसका क्या भाव है ?

प्रश्न : ५ भगवान के वचनानुसार वर्तन करना चाहिये यह बात किस ग्रंथ में स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने कहा है, इसका क्या नाम रखा है ?

प्रश्न : ६ "भगवान विना बीजा पदार्थमां रखे मारुंअंग बंधाई जाय नहि ?" ऐसा अंग किस भक्तराज का था, जिसकी प्रशंसा स्वयं श्रीजी महाराजने की है ?

प्रश्न : ७ "हालारडनुं अति हरिने गावे गोपी हालरडुं यह सुंदर प्रभु का "हालरडाना पद" किसने लिखा है ?"

जूलाई २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) कोई किसी की गुह्यवार्ता कभी न कहे (शि.प. ७५) । (२) स्वयं श्रीजी महाराजने प्रश्न किया एवं स्वयं उत्तर दिया । (३) आप जैसे विशिष्ट लोगों की जरूरत है । (४) बंधीया गाँव । (५) मैं घर आऊँगा तो वह जीवित नहीं हो जायेगा, इसलिये अग्नि संस्कार कर डालना । (६) देश, काल, संग, क्रिया, मंत्र, शास्त्र, दीक्षा, ध्यान । (७) स.गु. मुक्तानंद स्वामी ।

१. चंद्रिका, वैशाली, ज्योत्सना - जीरागढ
२. सां.यो. भारतीबा, मंजुबा, शांताबा - श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली
३. अरविंदाबहन आर. भावसार - चांदलोडीया
४. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
५. सां.यो. रसीलाबा तथा रतनबा - इसनपुर
६. हसुमतीबहन ठक्कर - इसनपुर
७. विनोद पी. पटेल - वहेलाल
८. कर्थारिया दलसुखभाई देवचंदभाई
९. मधुबहन अशोकभाई पटेल - विराटनगर
१०. सां.यो. रंजनबा तथा नानीबा - विराटनगर स्वामिनारायण मंदिर बहनो का
११. सां.यो. रसीलाबा तथा अस्मिताबा - श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर हवेली
१२. सां.यो. रंजनबा तथा रेखाबा -स्वा.मं.बालासिनोर बहनो का
१३. अल्काबहन अश्विनभाई सुजडिया - मयूरपार्क
१४. शांताबहन रसिकभाई पटेल - राणीप
१५. वन्दनबहन रसिकभाई पटेल - राणीप
१६. कौशिक, ज्योत्सना, पुष्पा, रसीला - जीरागढ
१७. पीयूष, अंकित, अवनी - राजकोट
१८. सां.यो. कंचनबा, कुंदनबा - स्वा.मं. मेडा
१९. कैलासबहन विष्णुभाई पटेल - नंदोल
२०. शारदाबहन कांतिभाई - नांदोल
२१. प्रफुलाबहन एस. पटेल - अहमदाबाद
२२. दिव्यांग, प्रयाग, कौशल, रक्षा, पूजा, वनिता - माणसा
२३. रुक्मिणीबहन सुखदेवभाई (मीना) मेढा
२४. विठ्ठलपरा अमरशीपरा बी. नवसारी
२५. माधवजीभाई आद्रोज - मोरबी
२६. रामजीभाई देवजी - जूना देवणीया
२७. सोनी भगवानदास देवजीभाई - मोरबी
२८. गोरधनदास शंकरदास पटेल - सोजा
२९. अमृतलाल मोदी - सोजा

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा शके । पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी कानाम अंक में छापा जायेगा ।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु भगवान श्रीहरिने कृषा करके समस्त सत्संग के लिये अपने पवित्र कुलीन वंशज को गुरुपद पर प्रतिष्ठित किया था। जिससे हजारों मुमुक्षु अपने अध्यात्ममार्ग पर चलकर परमात्मा की कृपा को प्राप्त कर शकें।

भगवान श्रीहरि द्वारा स्थापित श्री नरनारयणदेव के पीठ स्थान पर सप्तमाचार्य के स्प में पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री उत्तर विभाग के गुरुस्थान पर विराजमान हैं। वर्तमान में विदेश के धर्मयात्रा में होने से उन्हीं के स्थान पर प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का एवं प.पू. बडे महाराजश्री का गुरुपूर्णिमा के पावन प्रसंग पर समस्त सत्संग समाजने श्रद्धाभाव से वैदिक मंत्रोच्चार पूर्वक गुरुस्तुति मुक्ति का कार्य किया। मंगल प्रभात में श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती के बाद प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री विशाल सभा मंडप में विराजमान हुए थे।

प्रथम अहमदाबाद मंदिर के विद्वान महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने गुरुपूर्णिमा के माहात्म्य को बताया। बाद में विद्वान पंडितो ने विदविधि से पूजन किया। वयोवृद्ध संतोने एवं ट्रस्टी मंडलने तथा अग्रगण्य हरिभक्तोंने पुष्पहार पहनाकर भावपूर्वक आरती करके गुरुपूजन किया था। बाद में लालजी महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद देकर सभी को प्रसन्न किया था। समस्त संत-पार्षद भक्तजन हजारों की संख्या में उपस्थित होकर पुष्पमाला एवं भेंट अर्पण करके एवं चरण स्पर्श श्रद्धापूर्वक करके कृत कत्य हो गये थे।

- को. स्वामी सत्यप्रकाशदासो

एप्रोच बापुनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरुमंत्र प्राप्ति

अहमदाबाद के हार्द समान बापुनगर एप्रोच में ता. २१-३-०७ के दिन गुरुमंत्र महाराजश्री के हाथों से वेदविधिपूर्वक संपन्न हुआ था। यहाँ श्री नरनारायणदेव गादी का मंदिर निर्माण हुआ था। यहाँ पर सत्संगियोकी संख्या बढती ही जा रही है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य स.गु. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीकी शुभ प्रेरणा तथा उनके शिष्य एप्रोच मंदिर के स.गु. महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी के मार्गदर्शन तथा कथावार्ता के सुंदर योग से कई श्रीहरि के नये आश्रित भी बने हैं। उन्हें संप्रदाय की परंपरा तथा शिक्षापत्री की आज्ञानुसार धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री के पाससे गुरुमंत्र लेना जरुरी था। इस कारण २३-७-०७ सोमवार की सुबह ९-३० बजे एप्रोच के स्वामिनारायण मंदिर में ६५० जितने श्रीहरि के श्री नरनारायणदेव के नये आश्रितों को प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने गुरुमंत्र देकर दिव्य आशीर्वाद के साथ सत्संगी के स्प में स्वीकार किया। प्रत्येक आश्रितोने चरणभेंट देकर पूजन-अर्चन किया। प्रासंगिक सभा में पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजीने गुरु की एवं गुरुमंत्र की महिमा समझाया। सभी भक्तों को पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया।

-कोठारी पार्षद भूरा भगत

धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज की पूनः प्राण प्रतिष्ठा

अति प्राचीन एवं संप्रदाय में भी अति ऐतिहासिक धोलका नगरी में सर्वावतारी श्री घनश्याम महाराजकी पुनः प्रतिष्ठा का सुंदर आयोजन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष्य मं १५-६-०७ से ता. १९-६-०७ तक श्रीमद् भागवत कथा का सप्ताह पारायण होमात्मक विष्णुयाग, होमात्मक महापूजा, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की ज्ञान शिबिर रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम, एवं प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्या गादीवालाकी आज्ञा से महिला जागृति अभियान श्री मुरली मनोहर देव, हरिकृष्ण महाराज के दिव्य सांनिध्य में तथा श्रीजी महाराज के पवित्र कुल एवं उन्हीं के अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. बडे महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव देश के अहमदाबाद, मूली, कच्छ एवं वडताल देश के हजारों भक्तों ने तथा संत समुदाय ने उपस्थित होकर उत्सव का आनन्द लिया। इस प्रसंग पर आयोजित श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण के वक्ता शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने अपनी मधुर शैली में कथामृत पान कराया। पारायण के समय रुक्मिणी विवाह बड़े सुंदर ढंग से किया गया। धोलका के राजमार्ग पर अलंकृत रथ में ठाकुरजी को बैठाकर धूमधाम के साथ यात्रा निकाली गयी थी। इस शोभायात्रा में बडी संख्या में संत भाग लिये थे, नगर जन इस यात्रा का दर्शन करके भाव विभोर हो गये थे।

ता. १७-६-०७ शुभ मंगल दिन संप्रदाय के बडे प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रातः ६-३० बजे जब धोलका पधारे उस समय संत-हरिभक्तों ने धूमधाम के साथ स्वागत किया। सर्व प्रथम श्रीघनश्याम महाराजश्री की पुनः प्रतिष्ठा करके भक्तों को अलौकिक दर्शन का लाभ दिये थे।

प्रासंगिक सभा में पूज्य दोनो महंत स्वामीने पूज्य महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। इस के बाद विविध उत्सव के यजमानोने प.पू. आचार्य महाराजश्रीका पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अनेक विद्वान संतोने धोलका नगर के इतिहास को

बताया। स.गु. गोपालानंद स्वामीने श्रीहनुमानजी की स्थापना करके भक्तों के मनोरथ को पूर्ण कियाहै। इस स्थल पर ब्रह्मराक्षस का भी उद्धार किया था। श्रीजी महाराज ने यहाँ अनेकों लीलाये करके ठाकुरजीकी प्रतिष्ठा की थी। जिससे इनकी महिमा अपरंपार है। ऐतिहासिक पुराण कथा के अनुसार द्रोपदी का जन्म स्थल एवं पांडवो का गुप्तवास भी यही है। इस प्रकार साम्प्रदायिक इतिहास का निरूपण सभी ने किया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में कहा कि सभी लोग श्री नरनारायणदेव की दृढ़ निष्ठा रखें एवं मंदिर में विराजमान श्रीमुरली मनोहर देव, श्री हरिकृष्ण महाराज सभी का कल्याण करें आप सभी को नरनारायणदेव सुखिया करे ऐसी दिव्य चरणों में प्रार्थना।

इस प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री पदार्पण करके आशीर्वाद देकर सभी को अलौकिक सुख प्रदान किये थे। महिलाओं की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाने उपस्थित होकर सभी को आशीर्वाद देते हुए बताया कि आप सभी सत्संग की बल रखेंगी।

इस महोत्सव में स.गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी, स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी, अनिरुद्ध स्वामी, नरनारायण स्वामी, अचलप्रकाशदास, एच.के. स्वामी इत्यादि संतोने खूब सेवा की थी। इस प्रसंग पर अहमदाबाद से श्री कांतिभाई जोईताराम पटेल की सेवा खूब सराहनीय थी। अनेक हरिभक्तोंने भी खूब सहयोग किया था।

धोलका बावला, चलोडा, कोठ, भायला, साकोदग, बलोल भाल, जवारज, भात, काशीन्द्रा, सरोडा आदि गाँवो से भक्त जन आये हुए थे, जिन्होंने खड़े पग सेवा की थी। सेवा करनेवाले सभी भक्तों का भगवान कल्याण करे।

- नरनारायण स्वामी

इडर मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

यहाँ के मंदिर में विराजमान महाप्रतापी गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज तथा श्री सूर्यनारायणदेव का ६१ वाँ पाटोत्सव ज्येष्ठ शुक्ल-१३ के दिन प.पू.ध.धु. बडे आचार्य महाराजश्रीके शुभ सांनिध्य में धूमधाम से मनाया गया।

प्रात: ७-०० बजे बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री गोपीनथजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार पूजन वेद विधिसे सम्पन्न किया गया था। बाद में अन्नकूट की आरती पूज्य महाराजश्री ने उतारी थी।

प्रासंगिक सभा में ईडर मंदिर के महंत स्वामीने पुष्पहार से पूज्य महाराजश्री का स्वागत पूजन किया था। पाटोत्सव के यजमान श्री कालाभाई देवचंदभाई परिवार के रेवीबहन नारायणभाई पटेल के पुत्र श्री योगेशभाई तथा उनके पुत्र झलक एवं तृप्त तथा परिवार ने प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। महाराजश्रीने भेंट में ठाकुरजी की मूर्ति दी थी। सभा में नौ गाँव के लेउआ पाटीदार के अग्रेशर तथा ईडर, सापावाडा के हरिभक्तों ने पूज्य महाराजश्री का पूजनअर्चन करके आरती उतारी थी।

इस प्रसंग पर ईडर के मुश्लिम अग्रगण्य लोग महाराजश्री की आरती उतार कर दर्शन किये थे। अनेक धामों से पधारे हुए संतोने भी बडे महाराजश्री का पुष्पहार से पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव देश स्कीम कमेटी मे सभ्यपद पर जिसे रखा है ऐसे डॉ. के.के. पटेल को पूज्य बडे महाराजश्रीने आशीर्वाद के रूप में ठाकुरजी की मूर्ति भेंट में दी।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद, ईडर, हिम्मतनगर, प्रांतिज, टोडला, सापावाडा, एवं लेई से आये हुए संत प्रसंगोचित उद्बोधन किये थे।

श्री डॉ. के.के. पटेलने खूबभाव विभोर होकर बताया था कि प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हमारे परिवार पर अति प्रसन्नहोकर इस गौरवान्वित पद पर नियुक्त किया है। हमारे ऊपर पूज्य महाराजश्री की कृपा सदा बनी रहे तथा उन्ही की आज्ञा में हम अपनी क्रिया करते रहें ऐसी महाराज के चरणों में प्रार्थना। प.पू. बडे महाराजश्री के संकल्प से श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में हम सभी कटिबद्ध होकर तन-मन-धन का जितना भी सहयोग हो शके करें। जीवन में ऐसा अवसर फिर कभी नहीं मिलेगा।

अंत में पूज्य बडे महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्री स्वामिनारायण म्युझियम मे ऐसी दिव्य प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन होगा जो कल्याण के मार्ग में सहायक होगी। पाटोत्सव के यजमान परिवार तथा महंत स्वामी की सेवा की प्रशंसा की थी। यजमान के घर पदार्पण करके घर को पावन किये थे।

- को. सत्यसंकल्पदास

सिद्धपुर मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में १४३ वर्ष पूर्व आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री धर्म-भक्ति हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति को प्रतिष्ठित किये थे। उसी दिन का ध्यान रखकर आज १४३ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा महंत स्वामीकी प्रेरणा से अहमदाबाद के नटुभाई शांतिलाल परिवार की तरफ से सम्पन्न किया गया था।

ता. २७-६-०७ के दिन संतोने ठाकुरजी का महाभिषेक किया। इसके बाद अन्नकूट का सभी को दर्शन का लाभ मिला था। प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी एवं शा. सिद्धेश्वरदासजी एवं चन्द्रप्रकाशदासजी आदि संतोने ठाकुरजीका माहात्म्य समझाया था। यजमान परिवार का पुष्पहार से संमान करके आशीर्वाद दिया गया। *- को. स्वामी*

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

इष्टदेव बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज की जहाँ पर बाल्यावस्था बीती थी। ऐसे उस पवित्र तीर्थ अयोध्या के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंहत स्वामीकी प्रेरणा से लंडन के स्व. श्री शामजी हरजी केराई, स्व. सुंदरबाईने जेठाभाई के स्मरणार्थ माधापर (कच्छ) की तरफ से श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव धूमधाम से करवाया था। प्रात: ६-३० बजे ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन के साथ अभिषेक

एवं अन्नकूट के बाद आरती की गयी थी। जिसका दर्शन करके सत्संगी खूब आनंदित हुए थे। इस प्रसंग पर स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा छपैया के महंतने घनश्याम महाराज के लीलाचरित्रों का सुन्दर वर्णन किया था। संत-मंडल की सेवा प्रेरणास्प थी। - *साधु योगीचरणदास*

झुलासन श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ज्येष्ठ शुक्ल-१० को ता. २५-६-०७ के दिन यहाँ के मंदिर में श्री स्वामिनारायण भगवान के अन्तर्ध्यान के निमित्त सत्संग सभा-धुनि-कीर्तन कथावार्ता का आयोजन माणसा मंदिर के संतोने किया था। - *घनश्यामभाई गज्जर*

नवावणझर (सस्वेज)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर अधिकमास से कथावार्ता-धुनि-कीर्तन का कार्यक्रम स्वयंप्रकाशदासजी एवं संत मंडल ने किया था।

श्रीजी महाराज के अन्तर्ध्यान तिथि के निमित्त धुनि-कीर्तन-भजन इत्यादि का कार्यक्रम रखा गया था। बहुत सारे हरिभक्त भाग लिये थे। - *रमेशभाई पटेल*

ओलपाड (सूरत)

सूरत के ओलपाड विस्तार में हालार के हरिभक्त व्यापार हेतु स्थाई हुए हैं। इन हरि भक्तों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे महाराजश्रीने आज्ञा की है कि आप सभी सत्संग सभा का आयोजन करते रहना। जिससे हरिभक्त प्रत्येक गुरुवार को रात्रि में ८ से ९ बजे तक सत्संग सभा करते हैं। जिसमे वचनामृत २७३, कीर्तन भक्ति, ठाकुरजी का भोग-आरती की जाती है। प्रति गुरुवार को अलग-अलग घरों में सभा का आयोजन किया जाता है। प्रति सभा के अवसर पर श्री नरनारायणदेव पीठ के निवृत्त आचार्य महाराजश्री एवं वर्तमान पीठाधपति पूज्यपाद महाराजश्री फोन पर हार्दिक आशीर्वाद देते रहते हैं। इससे भक्तों में मनोबल बढता है।

- *शांतिलाल भगत, जीरागढ*

कडी (कलोल) मंदिर में सत्संग सभा

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कीआज्ञा से मंदिर के को. कल्याणभाई ने ता. २६-७-०७ के दिन देवशयनी एकादशी को सुन्दर सत्संग सभा का आयोजन किया था। प्रातः ९ से ११ बजे तक जेतलपुर के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री पी.पी. स्वामीने सर्वोपरि भगवान एवं उन्हीं के वंशज धर्मकुल की महिमा एवं वचनामृत के रहस्यों का उद्‌बोधन किया था। जिसका रसपान भक्तोंने किया। साथ में पू. श्यामचरण स्वामी, जेतलपुर के को. स्वामी, वि.पी. स्वामी जेतलपुर सं.पाठशाला के संत भजन कीर्तन का आनंद दिये थे। बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर आनंद लिये थे।

- *शा. भक्तिनंदनदास*

भायला (धोलकादेश) मंदिर में सत्संग सभा

यहाँ के श्री मुरली मनोहर देव हरिकृष्ण महाराज के धोलका देश के भायला गाँव में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान भक्तों का सत्संग सुप्रसिद्ध है। यहाँ के भक्तों को कथा सुनने की इच्छा थी, जिससे पूज्य पी.पी. स्वामी को प्रार्थना किये कि हमारे गाँव में आप कथा वांचे। पी.पी. स्वामीने त्वरित संत मंडल के साथ पधारकर सर्वोपरि महाराज एवं सर्वोपरि धर्मकुल के लीलाचरित्रों का अद्‌भुत गुणानुवाद सरल एवं भावात्मक शैली में सुनाकर सभी को निश्चय पक्ष एवं नीति की बात करके आनंदित किया था। सभी को यह बताया कि पू. महाराजश्री की आज्ञा में आप सभी रहेंगे तो आप सभी का निश्चित कल्याण होगा। अगल-बगल के बहुतायत में भक्तजन कथाका लाभ लिये थे। कोठारी विश्वप्रकाशदास एवं संत मंडल ने कीर्तन भक्ति की थी। - *शा. भक्तिनंदनदास*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

सुरन्द्रनगर मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार का भूमि पूजन

प.पू. निवृत्त आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ संकल्प से एवं वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार का भूमि पूजन भावि आचार्य प.पू. लालजी १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथों से ता. १६-७-०७ के दिन आषाढ शुक्ल-२ को धूम-धाम से सम्पन्न किया गया था। इस प्रसंग पर बहनो के मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री तथा .पू. श्रीराजा पधारीथी। बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को दिव्य दर्शन का लाभ दी थी। समस्त त्यागी बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। समग्र आयोजन को. स्वामीने किया था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। - *शैलेन्द्रसिंह*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री

कोलोनीया के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ५ मई शनिवार शाम को ५-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठ के छठ्ठे निवृत्त आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का शुभआगमन हुआ तब स्थानिक हरिभक्त आनंदित होकर प.पू. बडे महाराजश्री का स्वागत उत्सव करने हेतु संत के साथ तैयार हो गये थे। सबसे पहले प.पू. बडे महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की आरती उतारकर सभी हरिभक्तो को दर्शन

का दिव्य अलौकिक लाभ प्रदान किया। उसी प्रकार प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री का स्वागत-पूजन आदि यजमान सत्संगी बहनोने उत्साहपूर्वक किया था। प.पू.अ.सौ. बिन्दुराजा का भी बहनोने प्रेम से स्वागत किया था। प.पू. बडे महाराजश्री के साथ शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा स्वामी कृष्णवल्लभदासजी आदि संत मंडल तथा हरिभक्त भी सेवा में जुडे थे। बोस्टन तथाय ह्युस्टन मंदिर से शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा ज्ञान स्वामी इस प्रसंग पर खास उपस्थित रहे थे। प्रासंगिक सभा में श्रीहरिनाम स्मरण धून तथा नंद संतो द्वारा कीर्तन-गान का कार्यक्रम हुआ।

बाद में बोस्टन से आये हुए शा.स्वा. हरिप्रकाशदासने प.पू. बडे महाराजश्री के विदेश की प्रवृति पर बडा सुन्दर निरुपण किया था। जिसके फलस्वरूप आज श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान का विदेशों में अनेको मंदिर एवं सत्संगियो की संख्या बढती गयी। पूज्य बडे महाराजश्री एवं प.पू. आचार्य महाराजश्री आज भी सत्संग के विकास हेतु सतत प्रयत्नशील रहते हैं। प.पू. बडे महाराजश्री गादी पद से निवृत्त होने के बाद अपने अलौकिक दिव्य संकल्प "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" की प्रवृति में रात दिन लगे रहते हैं। आज हम अमेरिका वासी इस बात को जानते हैं कि पू. महाराजश्री "श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रचार-प्रसार हेतु हम सभी के आमंत्रण पर यहाँ पधारे हुए हैं। कितने ही हरिभक्तों को इस भगीरथ प्रयास में सहयोग करने की भावना थी, वे इन्डिया जाते फिर यह सम्भव होता, आज स्वयं पू. महाराजश्री यहाँ पधारे हुए है, तो सभी भक्तों की ईच्छा पूर्ण होगी। इस प्रकार का प्रवचन साथ में आये हुए शा.स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने किया। प.पू. बडे महाराजश्री भक्तों पर खूब प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। I.S.S.O. द्वारा चल रही "सेवा" की प्रवृत्ति को और अधिक प्रोत्साहन मिले, इस प्रकार आशीर्वाद देकर प्रोत्साहित किये थे।

ह्युस्टन (I.S.S.O., U.S.A.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर

हमारे ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कलश महोत्सव २४ जून से ३० जून तक धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण श्री योगेन्द्रभाई भट्ट के वक्तापद पर हुआ था।

कथा में कृष्ण जन्मोत्सव, रूक्ष्मणी विवाह, रास गरबा आदि लीला चरित्रों का अद्भुत वर्णन वक्ताश्रीने कियाथा।

श्री घनश्याम महाराजश्री की मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद हाथों से वेद विधिपूर्वक हुई थी।

इस प्रसंग पर मासतियज्ञ का सुंदर आयोजन हुआ था। जिसमें कई हरिभक्तों ने लाभ लिया था। अन्य कार्यक्रमो में मेडिकल हेल्थ केम्प तथा ब्लड डोनेशन केम्प में कई हरिभक्तों तथा श्रद्धालु लोगोंने ब्लड डोनेशन कियाथा। तथा कई रोगियओं का चेकअप करके उन्हें दवाईयाँ दी गई। ता. २७ जून को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री यहाँ पधारे तब संत-हरिभक्तोंने उनका स्वागत उत्साह पूर्वक धूमधाम से किया। इस प्रसंग पर १२ बजे तक हरिभक्तों को प्रसन्न रखने हेतु अपने आश्रितों के घर को पावन करने बिना थके परिश्रम की परवाह किये बिना पधरावणी चालू रखी थी। इस प्रसंग पर मंदिर में भव्य रंगोत्सव मनाया गया। हजारो हरिभक्तोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को ऐसा रंग दिया की दूसरा और कोई रंग उन पर चढे ही नहीं। हरिभक्त भी आज आपस में ही रंगने को आतुर थे। एक तरफ सुंदर कथा तथा दूसरी तरफ रंगोत्सव का सुंदर आनंद बहुत ही अद्भुत लग रहा था। के.पी. स्वामी तथा संत मंडलने इस प्रसंग की सेवा में अद्भुत योगदान प्रदान किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से सुवर्ण कलश का स्थापन भव्यता से किया गया था। उसके बाद कथा की तथा यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती उतारी गई थी। प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद देकर ह्युस्टन के सत्संग की प्रशंसा की थी। इस प्रसंग पर उत्साही हरिभक्त गण, युवक मंडल, डॉक्टर आदि सभी सुंदर सेवा प्रदानकरके प्रेरणात्मक रूप बन गये थे। इस प्रकार ह्युस्टन मंदिर में हरिभक्तो को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का नित्य दर्शन सेवा-पूजा का महा अलौकिक लाभ मिला था। इसीलिये सभी बहुत ही भावनायुक्त बन गये थे।

- रमेश टी. पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (I.S.S.O.) ओस्ट्रेलीया

सीडनी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। जिसमें श्रीहरि-रामनवमी, श्री हनुमान जयंती, प.पू. बडे महाराजश्री का प्राकट्योत्सव आदि उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया था। प.भ. बिपीनभाई दवेने सर्वोपरि ईष्टदेव श्रीहरि की सुंदर महिमा कही थी। नंद संतोने रास-गरबा का उत्सव मनाया। श्री परेशभाई जुठाणी, श्रीचंद्रकांत पटेल तथा श्री अर्जुनभाई शाहने यजमान पद का लाभ लिया था।

श्री योगेशभाई पटेल तथा श्री निलेशभाई पटेल श्री हनुमान चालीसा के यजमान बने थे। ५१ हनुमान चालीसा का पाठ किये गये थे। श्री रामचंद्र त्रिवेदी तथा श्री अंश शाहने सेवा का लाभ लिया था।

अन्य सत्संग सभा में श्री विष्णु खीमजीभाई वाघजीयाणी, श्री महेन्द्रभाई अमीन, श्री धर्मेश वडोदरीया, श्री जिज्ञेश शुक्ल आदि कई लोग यजमान पद का लाभ लिये थे। सभा में वचनामृत विवेचन तथा हमारे दूसरे मान्य शास्त्रों का वांचन कथामृत,

शिक्षापत्री का विवेचन तथा नंद संतोने कीर्तन तथा नित्यनियम आरती समूह में कि थी ।

एकादशी को श्री स्वामिनारायण कथा श्री बीपीनभाई दवे ने सरल ढंगसे समझायी थी । इस प्रसंग पर कई हरिभक्तोंने सत्संग सभा तथा दर्शन का दिव्य लाभ प्राप्त किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढ रही है ।

दि. २७-५-२००७ को कमला एकादशी के अवसर पर श्री स्वामिनारायण कथा का आयोजन किया गया था । उसके यजमान प.भ. भाईलालभाई पटेल तथा प.भ. आनीलभाई कस्तुरीया थे ।

दि. ३-६-०७ को आयोजित सत्संग सभा में धून-भजन-कीर्तन तथा वचनामृत का पाठ किया गया था । नंद संतो के कीर्तन-भजन तथा रास गरबा का आयोजन हुआ था । प.भ. हार्दिकभाई पटेल इस सभाके यजमान बने थे ।

दि. १०-६-०७ की सत्संग सभा में कई हरिभक्त उपस्थित थे सभीने साथ मिलकर धून-भजन कीर्तन इत्यादि कर्म किये थे । सभा के यजमान प.भ. अंकितभाई दीक्षित थे ।

दि. ११-६-०७ को एकादशी पर सीनीयर सीटीजन की तरफ से सभा हुई थी । बडी संख्या में लोग उपस्थित थे । तथा सुंदर एकादशी के पदो का समूहगान किया गया था ।

दि. १-७-०७ की सभा में नंद संतो के कीर्तन पर रास खेलने बडी मात्रा में हरिभक्त उपस्थित थे । इस सभा के यजमान श्री सुनीलभाई दरजी थे ।

दि. ८-७-०७ तथा १५-७-०७ की सभा में सुंदर भजन-कीर्तन, भक्ति शास्त्रोका पाठ किया गया था । अंत में ठाकुरजी की थाल तथा नीति नियम किया गया था । जिसके यजमान के रूप में चिन्मय दीक्षित और सुरेशभाई पटेल थे ।

दि. २२-७-०७ को सत्संग सभा अ.नि.प.भ. रवजीभाई बाघजीयाणी के स्मरणार्थ प.भ. खीमजीभाई वाघजीयाणी की तरफ से हुई थी । सुंदर सभा में श्रीजी महाराज तथा धर्मकुल का महात्म्य तथा कीर्तन भक्ति हुई ती । अंत में ठाकुरजी को थाल चढाया गया था ।

दि. १५-७-०७ को रथयात्रा के अवसर पर पैदल यात्रा का आयोजन किया गया था । जिसमें कई हरिभक्त सामिल हुए थे । मंदिर में सुंदर रथयात्रा देखकर हरिभक्त आनंदित हुए थे । इस दिन महामंत्र लेखन का आयोजन किया गया था । हरिभक्त साथ मिल कर भजन कीर्तन तथा कथावार्ता थाल आरती किये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति सुंदर चल रही है ।

- तेजस पटेल

अमेरिका में सत्संग यात्रा

पत्ते - पत्ते पर स्वामिनारायण नाम हो इसलिए अपने महाराजश्री खूब मेहनत कर रहे है । देश-विदेश की धरती पर मंदिरो का निर्माण करवा रहे हैं । केनेडा में मंदिर कार्य में प.पू. महाराजश्री अहमदाबाद से केनेडा पधारे और शा.स्वा. हरिकेशवदासजी को अमरिका भेजा है ।

शा.स्वा. तथा उनके शिष्य शा. हरिप्रियदासजीने सर्वप्रथम न्यूजर्सी विहोकन मंदिर में शनिवार से सत्संग सभामें वहाँ के महंत माधव स्वामीके साथ कथा में लाभ दिया था । वहाँ से मान्वेस्टर में वीरेन्द्रभाई के यहाँ सत्संग का लाभ देकर वहाँ से मेडीसन डो. उमेशभाई के यहाँ होकर इटास्का के मंदिर में प.पूध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ विशाल सत्संग सभा में उपस्थित थे । तथा पू. महाराजश्री फाल्गुनभाई के नये मकान पर पधारे थे, वहाँ कथावार्ता का लाभ दिया था ।

वहाँ से एडीसन कोलोनीया के मंदिर में पू. महाराजश्री की आज्ञा से तीन दिन की पुरुषोत्तम प्रकाश पारायण का आयोजन किया गया था । जिसके वक्ता शा. हरिप्रियदासजी ने सरल भाषा में कथा कर सुंदर दृष्टांत दिये थे । प्रतिदिन शा.स्वा. हरिकेशवदास दोनो समय आधे घंटे कथा का लाभ देकर भक्तो को प्रसन्न किये थे । बडे समय बाद शास्त्री स्वामी के मुख से कथा सुनकर हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए । और यहा संत द्वारा सत्संग का लाभ देने के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अंतःकरण से धन्यवाद माने थे ।

इस समग्र कार्यक्रम के दौरान एरपोर्ट पर लाने ले जाने की समग्र जिमेदारी न्यूयोर्क के हेतलभाई भावसारने उत्साहपूर्वक की थी ।

- के. पी. पटेल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने दिल्ली श्री स्वामिनाराण के नये महंत के रूप में स्वामी जगतप्रकाशदासजी गुरु स्वामी बालमुकुन्ददासजी एवं महंत स्वा. विष्णुप्रसाददासजी गुरुस्वामी जगतप्रकाशदासजीकी किया है । निवृत्त महंत स्वामी देवप्रसाददासजी की सेवा एवं सत्संगियों के प्रति पवित्रभावना खूब सराहनीय थी ।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

भायला (ता. बावळा) : प.भ. गगुभाई विसाभाई दि. ६-७-२००७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

विहार : प.भ. सांकळचंद मणीलाल पटेल दि. १६-७-२००७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

झुलासण : प.भ. घनश्यामभाई केशवलाल पटेल दि. ६-६-२००७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।



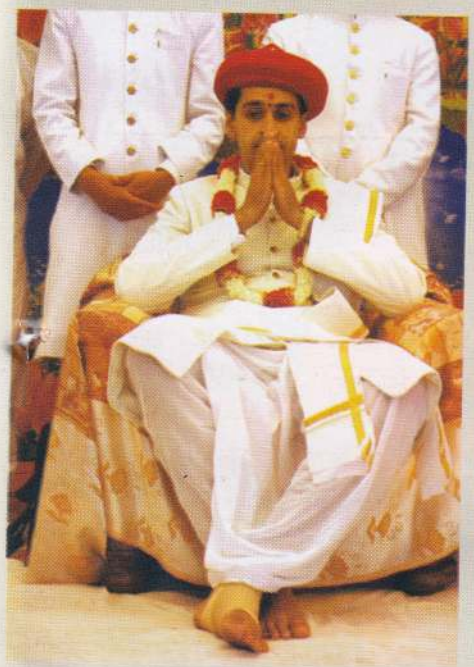
धोलका मंदिर में संत हरिभक्तों के साथ उत्सव करते हुए श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल ।



धोलका मंदिर में श्री घनश्याम महाराजकी पुनः प्रतिष्ठा प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।



धोलका मंदिर में श्री विष्णुयाग प्रसंग पर श्रीफल का होम करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





धोलका मंदिर की सभा में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्री ।





नारायणघाट मंदिर में संदर कांड प्रसंग पर दर्शन देते हुए प.प. आचार्य महाराजश्री ।

under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08





गुरुपूर्णिमा के शुभ दिन सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।



एप्रोच बापूनगर मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री नये आश्रितो को गुरुमंत्र देते हुए ।

Prafull